दानिय्येल

दानिय्येल का बाबुल ले जाया जाना

1 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने
यरूशलेम पर आक्रमण किया और अपनी सेना के
साथ उसने यरूशलेम को चारों ओर से घेर लिया। यह उन
दिनों की बात है जब यहूदा के राजा यहोयाकीम के शासन
का तीसरा वर्ष चल रहा था। 2यहोवा ने यहूदा के राजा
यहोयाकीम को नबूकदनेस्सर के द्वारा पराजित करा दिया।
नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर के मन्दिर के साज़ो-सामान
को भी हथिया लिया। नबूकदनेस्सर उन वस्तुओं को शिनार
ले गया। नबूकदनेस्सर ने उन वस्तुओं को उस मन्दिर में
रखवा दिया जिसमें उसके देवताओं की मूर्तिया थी।

3इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने अशपनज को
एक आदेश दिया। (अशपनज राजा के खोजे सेवकों का
प्रधान था।) राजा ने अशपनज को कुछ यहूदी पुरुषों को
उसके महल में लाने को कहा था। नबूकदनेस्सर चाहता
था कि प्रमुख परिवारों और इस्राएल के राजा के परिवार
के कुछ यहूदी पुरुषों को वहाँ लाया जाये। 4नबूकदनेस्सर
को केवल हट्टे-कट्टे यहूदी जवान ही चाहिये थे। राजा
को बस ऐसे युवक ही चाहिये थे जिनके शरीर पर कोई
खरोंच तक न लगी हो और उनका शरीर किसी भी
तरह के दोष से रहित हो। राजा सुन्दर, चुस्त और बुद्धिमान
नौजवान ही चाहता था। राजा को ऐसे युवक चाहिये थे
जो बातों को शीघ्रता से और सरलता से सीखने में समर्थ
हों। राजा को ऐसे युवकों की आवश्यकता थी जो उसके
महल में सेवा कार्य कर सकें। राजा ने अशपनज को
आदेश दिया कि उन इस्राएली युवकों को कसदियों की
भाषा और लिपि की शिक्षा दी जाये।

5राजा नबूकदनेस्सर उन युवकों को प्रतिदिन एक
निश्चित मात्रा में भोजन और दाखमधु दिया करता था।
यह भोजन उसी प्रकार का होता था, जैसा स्वयं राजा
खाया करता था। राजा की इच्छा थी कि इस्राएल के उन
युवकों को तीन वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाये और फिर तीन
वर्ष के बाद वे युवक बाबुल के राजा के सेवक बन जायें।
6उन युवकों में दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह
शामिल थे। ये युवक यहूदा के परिवार समूह से थे।

7सो इसके बाद यहूदा के उन युवकों को अशपनज
ने नये नाम रख दिये। दानिय्येल को बेलतशस्सर का
नया नाम दिया गया। हनन्याह का नया नाम था शद्रक।
मीशाएल को नया नाम दिया गया मेशक और अजर्याह
का नया नाम रखा गया अबेदनगो।

8दानिय्येल राजा के उत्तम भोजन और दाखमधु को
ग्रहण करना नहीं चाहता था। दानिय्येल नहीं चाहता था
कि वह उस भोजन और उस दाखमधु से अपने आपको
अशुद्ध कर ले। सो उसने इस प्रकार अपने आपको
अशुद्ध होने से बचाने के लिये अशपनज से विनती की।

9परमेश्वर ने अशपनज को ऐसा बना दिया कि वह
दानिय्येल के प्रति कृपालु और अच्छा विचार करने लगा।
10किन्तु अशपनज ने दानिय्येल से कहा, 'मैं अपने स्वामी,
राजा से डरता हूँ। राजा ने मुझे आज्ञा दी है कि तुम्हें यह
भोजन और यह दाखमधु दी जाये। यदि तू इस भोजन को
नहीं खाता है तो तू दुर्बल और रोगी दिखने लगेगा। तू
अपनी उम्र के दूसरे युवकों से भद्दा दिखाई देगा। राजा इसे
देखेगा और मुझ पर क्रोध करेगा। हो सकता है, वह मेरा
सिर कटवा दे! जबकि यह दोष तुम्हारा होगा।"

11इसके बाद दानिय्येल ने अपने देखभाल करने वाले
से बातचीत की। अशपनज ने उस रखवाले को दानिय्येल,
हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के ऊपर ध्यान रखने
को कहा हुआ था। 12दानिय्येल ने उस रखवाले से कहा,
"कृपा करके दस दिन तक तू हमारी परीक्षा ले। हमे खाने
को साग-सब्जी और पीने को पानी के सिवाय कुछ मत
दे। 13फिर दस दिन के बाद उन दूसरे नौजवानों के साथ तू
हमारी तुलना करके देख, जो राजा का भोजन करते हैं

और फिर अपने आप देख कि अधिक स्वस्थ कौन दिखाई देता है। फिर तू अपने–आप यह निर्णय करना कि तू हमारे साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है। हम तो तेरे सेवक हैं।"

14सो वह रखवाला दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह की दस दिन तक परीक्षा लेते रहने के लिये तैयार हो गया। 15दस दिनों के बाद दानिय्येल और उसके मित्र उन सभी नौजवानों से अधिक हट्टे–कट्टे दिखाई देने लगे जो राजा का खाना खा रहे थे। 16सो उस रखवाले ने उन्हें राजा का वह विशेष भोजन और दाखमधु देना बन्द कर दिया और वह दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को उस खाने के स्थान पर साग सब्जियाँ देने लगा।

17परमेश्वर ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को बुद्धि प्रदान की और उन्हें अलग–अलग तरह की लिपियों और विज्ञानों को सीखने की योग्यता दी। दानिय्येल तो हर प्रकार के दिव्य दर्शनों और स्वप्नों को भी समझ सकता था।

18राजा चाहता था कि उन सभी युवकों को तीन वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाये। प्रशिक्षण का समय पूरा होने पर अशपनज उन सभी युवकों को राजा नबूकदनेस्सर के पास ले गया। 19राजा ने उनसे बातें कीं। राजा ने पाया कि उनमें से कोई भी युवक उतना अच्छा नहीं था जितने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह थे। सो वे चारों युवक राजा के सेवक बना दिये गये। 20राजा हर बार उनसे किसी महत्त्वपूर्ण बात के बारे में पूछता और वे अपने प्रचुर ज्ञान और समझ बूझ का परिचय देते। राजा ने देखा कि वे चारों उसके राज्य के सभी जादूगरों और बुद्धिमान लोगों से दस गुणा अधिक उत्तम हैं। 21सो राजा कुस्रू के शासन काल के पहले वर्ष तक दानिय्येल राजा की सेवकाई करता रहा।

नबूकदनेस्सर का स्वप्न

2 नबूकदनेस्सर ने अपने शासन के दूसरे वर्ष के मध्य एक सपना देखा। उसके सपने ने उसे व्याकुल कर दिया। जैसे तैसे बहुत देर बाद उसे नींद आई। 2सो राजा ने अपने समझदार लोगों को अपने पास बुलाया। वे लोग जादू–टोना किया करते थे, और तारों को देखा करते थे। सपनों का फल बताने के लिये वे ऐसा किया करते थे। वे ऐसा इसलिये करते थे कि जो कुछ भविष्य में घटनेवाला है, वे उसे जान जायें। राजा उन लोगों से यह चाहता था कि वे, उसके बारे में उसे बतायें जो सपना उसने देखा है। सो वे भीतर आये और आकर राजा के आगे खड़े हो गये।

3तब राजा ने उन लोगों से कहा, "मैंने एक सपना देखा हैं जिससे मैं व्याकुल हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस सपने का अर्थ क्या है?"

4इस पर उन कसदियों ने राजा से उत्तर देते हुए कहा। वे अरामी भाषा में बोल रहे थे। "राजा चिरंजीव रहे। हम तेरे दास हैं। तू अपना स्वप्न हमें बता। फिर हम तुझे उसका अर्थ बतायेंगे।"

5इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा, "नहीं! वह सपना क्या था, यह भी तुम्हें ही बताना है और उस सपने का अर्थ क्या है, यह भी तुम्हें ही बताना है और यदि तुम ऐसा नहीं कर पाये तो मैं तुम्हारे टुकड़े–टुकड़े कर डालने की आज्ञा दे दूँगा। मैं तुम्हारे घरों को तोड़ कर मलबे के ढ़ेर और राख में बदल डालने की आज्ञा भी दे दूँगा 6और यदि तुम मुझे मेरा सपना बता देते हो और उसकी व्याख्या कर देते हो तो मैं तुम्हें अनेक उपहार, बहुत से प्रतिफल और महान आदर प्रदान करूँगा। सो तुम मुझे मेरे सपने के बारे में बताओ और बताओ कि उसका अर्थ क्या है।"

7उन बुद्धिमान पुरुषों ने राजा से फिर कहा, "हे राजन, कृपा करके हमें सपने के बारे में बताओ और हम तुम्हें यह बतायेंगे कि उस सपने का फल क्या है।"

8इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने कहा, "मैं जानता हूँ, तुम लोग और अधिक समय लेने का जतन कर रहे हो। तुम जानते हो कि मैंने जो कहा, वही मेरा अभिप्राय है। 9तुम यह जानते हो कि यदि तुमने मुझे मेरे सपने के बारे में नहीं बताया तो तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। सो तुम सब एक मत हो कर मुझसे बातें बना रहे हो। तुम और अधिक समय लेना चाहते हो। तुम्हें यह आशा है कि मैं जो कुछ करना चाहता हूँ उसे तुम्हारी बातों में आकर भूल जाऊँगा। अच्छा अब तुम मुझे मेरा सपना बताओ। यदि तुम मुझे मेरा सपना बता पाओगे तभी मैं यह जान पाऊँगा कि वास्तव में उस सपने का अर्थ क्या है। यह तुम मुझे बता पाओगे!"

10कसदियों ने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "हे
राजन, धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जैसा, आप
करने को कह रहे हैं, जो वैसा कर सके। बुद्धिमान
पुरुषों अथवा जादूगरों या कसदियों से किसी भी राजा
ने कभी भी ऐसा करने को नहीं कहा। यहाँ तक कि
महानतम और सबसे अधिक शक्तिशाली किसी भी
राजा ने कभी अपने बुद्धिमान पुरुषों से ऐसा करने को
नहीं कहा। 11महाराज, आप वह काम करने को कह
रहे हैं, जो असम्भव है। बस राजा को उसके सपने के
बारे में और उसके फल के बारे में देवता ही बता
सकते हैं। किन्तु देवता तो लोगों के बीच नहीं रहते।"
12जब राजा ने यह सुना तो उसे बहुत क्रोध आया
और उसने बाबुल के सभी विवेकी पुरुषों को मरवा
डालने की आज्ञा दे दी। 13राजा नबूकदनेस्सर के
आज्ञा का ढ़िढोरा पिटवा दिया गया। सभी बुद्धिमान
पुरुषों को मारा जाना था, इसलिए दानिय्येल और
उसके मित्रों को भी मरवा डालने के लिये उनकी
खोज में राज–पुरुष भेज दिये गये।
14अर्योक राजा के रक्षकों का नायक था। वह
बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों को मार डालने के लिये जा
रहा था, किन्तु दानिय्येल ने उससे बातचीत की।
दानिय्येल ने अर्योक से बुद्धिमानी के साथ नम्रतापूर्वक
बात की। 15दानिय्येल ने अर्योक से पूछा, "राजा ने
इतना कठोर दण्ड देने की आज्ञा क्यों दी है?"
इस पर अर्योक ने राजा के सपने वाली सारी कहानी
कह सुनाई, दानिय्येल उसे समझ गया। 16दानिय्येल
ने जब यह कहानी सुन ली तो वह राजा नबूकदनेस्सर
के पास गया। दानिय्येल ने राजा से विनती की कि
वह उसे थोड़ा समय और दे। उसके बाद वह राजा को
उसका स्वप्न और उस स्वप्न का फल बता देगा।
17 इसके बाद दानिय्येल अपने घर को चल दिया।
उसने अपने मित्र हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह
को वह सारी बात कह सुनाई। 18दानिय्येल ने अपने
मित्रों से स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा।
दानिय्येल ने उनसे कहा कि वे परमेश्वर से प्रार्थना
करें कि वह उन पर दयालू हो और इस रहस्य को
समझने में उनकी सहायता करे जिससे बाबुल के
दूसरे विवेकी पुरुषों के साथ दानिय्येल और उसके
मित्र भी मौत के घाट न उतार दिये जायें।
19रात के समय परमेश्वर ने एक दर्शन में दानिय्येल
को वह रहस्य समझा दिया। इस पर स्वर्ग के परमेश्वर
की स्तुति करते हुए 20दानिय्येल ने कहा:

"परमेश्वर के नाम की सदा प्रशंसा करो!
शक्ति और सामर्थ्य उसमें ही होते हैं!
21 वह ही समय को बदलता है
वह ही वर्ष के ऋतुओं को बदलता है।
वह ही राजाओं को बदलता है।
वही राजाओं को शक्ति देता है
और वही छीन लेता है।
वही बुद्धि देता है और लोग
बुद्धिमान बन जाते हैं।
वही लोगों को ज्ञान देता है
और लोग ज्ञानी बन जाते हैं।
22 वह गहन और छिपे रहस्यों का ज्ञाता है
जो समझ पाना कठिन है।
उसके संग प्रकाश बना रहता है,
सो इसी से वह जानता है कि अन्धेर में
और रहस्य भरे स्थानों में क्या है!
23 हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तुझको धन्यवाद
देता हूँ और तेरे गुण गाता हूँ।
तूने ही मुझको ज्ञान और शक्ति दी।
जो बातें हमने पूछी थी उनके बारे में
तूने हमें बताया!
तूने हमें राजा के सपने के बारे में बताया।"

दानिय्येल द्वारा राजा के स्वप्न की व्याख्या

24इसके बाद दानिय्येल अर्योक के पास गया। राजा
नबूकदनेस्सर ने अर्योक का बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों
की हत्या के लिये नियुक्त किया था। दानिय्येल ने
अर्योक से कहा, "बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों की हत्या
मत करो। मुझे राजा के पास ले चलो, मैं उसे उसका
स्वप्न और उस स्वप्न का फल बता दूँगा।"
25सो अर्योक दानिय्येल को शीघ्र ही राजा के पास
ले गया। अर्योक ने राजा से कहा, "यहूदा के बन्दियों
में मैंने एक ऐसा पुरुष ढूँढ लिया है जो राजा को उसके
सपने का मतलब बता सकता है।"
26सो राजा ने दानिय्येल (बेलतशस्सर) से एक प्रश्न
पूछा, "क्या तू मुझे मेरे सपने और उसके अर्थ के बारे में

बता सकता है?" 27दानिय्येल ने उत्तर दिया, "हे राजा नबूकदनेस्सर, तुम जिस रहस्य के बारे में पूछ रहे हो, उसे तुम्हें न तो कोई पण्डित, न कोई तान्त्रिक और न कोई कसदी बता सका है। 28किन्तु स्वर्ग में एक परमेश्वर ऐसा है जो भेद भरी बातों का रहस्य बताता है। परमेश्वर ने राजा नबूकदनेस्सर को आगे क्या होने वाला है, यह दर्शाने के लिये सपना दिया है। अपने बिस्तर में सोते हुए तुमने सपने में जो बातें देखी थीं, वे ये हैं, 29हे राजा! तुम अपने बिस्तर में सो रहे थे। तुमने भविष्य में घटने वाली बातों के बारे में सोचना आरम्भ किया। परमेश्वर लोगों को रहस्यपूर्ण बातों के बारे में बता सकता है। सो उसने भविष्य में जो घटने वाला है, वह तुम्हें दर्शा दिया। 30परमेश्वर ने वह रहस्य मुझे भी बता दिया है। ऐसा इसलिये नहीं हुआ कि मेरे पास दूसरे लोगों से कोई अधिक बुद्धि है। बल्कि मुझे परमेश्वर ने इस भेद को इसलिए बताया है कि राजा को उसके सपने का फल पता चल जाये और इस तरह हे राजन, तुम्हारे मन में जो बातें आ रही थीं, उन्हें तुम समझ जाओ।

31"हे राजन, सपने में आपने अपने सामने खड़ा एक विशाल मूर्ति देखा है, वह मूर्ति बहुत बड़ा था, वह चमकदार था और बहुत अधिक प्रभावपूर्ण था। वह ऐसा था जिसे देखकर देखने वाले की आँखे फटी की फटी रह जायें। 32उस मूर्ति का सिर शुद्ध सोने का बना था। उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की बनी थीं। उसका पेट और जाँघें काँसे की बनी थीं। 33उस मूर्ति की पिण्डलियाँ लोहे की बनी थीं। उस मूर्ति के पैर लोहे और मिट्टी के बने थे। 34जब तुम उस मूर्ति की ओर देख रहे थे, तुमने एक चट्टान देखी। देखते-देखते, वह चट्टान उखड़ कर गिर पड़ी किन्तु उस चट्टान को किसी व्यक्ति ने काट कर नहीं गिराया था। फिर हवा में लुढ़कती वह चट्टान मूर्ति के लोहे और मिट्टी के बने पैरों से जा टकराई। उस चट्टान से मूर्ति के पैर चकनाचूर हो गये। 35फिर तत्काल ही लोहा, मिट्टी, काँसा, चाँदी और सोना सब चूर-चूर हो गया और वह चूरा गर्मियों के दिनों में खलिहान के भूसे जैसा हो गया। उन टुकड़ों को हवा उड़ा ले गयी। वहाँ कुछ भी तो नहीं बचा। कोई यह कह ही नहीं सकता था कि वहाँ कभी कोई मूर्ति था भी। फिर वह चट्टान जो उस मूर्ति से टकराई थी, एक विशाल पर्वत के रुप में बदल गयी और सारी धरती पर छा गयी।"

36"आपका सपना तो यह था। अब हम राजा को यह बताते हैं कि इस सपने का फल क्या है? 37हे राजन, आप अत्यंत महत्त्वपूर्ण राजा हैं। स्वर्ग के परमेश्वर ने तुम्हें राज्य दिया है। शक्ति दी है। सामर्थ्य और महिमा दी हैं। 38आपको परमेश्वर ने नियन्त्रण की शक्ति दी हैं और आप, लोगों पर, वन के पशुओं पर और पक्षियों पर शासन करते हो। वे चाहे कहीं भी रहते हों, उन सब पर परमेश्वर ने तुम्हें शासक ठहराया है। हे राजा नबूकदनेस्सर, उस मूर्ति के ऊपर जो सोने का सिर था, वह आप ही हैं।

39"आप के बाद जो दूसरा राज आयेगा, वही वह चाँदी का हिस्सा है। किन्तु वह राज्य तुम्हारे राज्य के समान विशाल नहीं होगा। इसके बाद धरती पर एक तीसरे राज्य का शासन होगा। वही वह काँसे वाला भाग है। 40इसके बाद फिर एक चौथा राज्य आयेगा, वह राज्य लोहे के समान मज़बूत होगा। जैसे लोहे से वस्तुएँ टूट कर चकनाचूर हो जाती हैं, वेसे ही वह चौथा राज्य दूसरे राज्यों को भंग करके चकनाचूर करेगा।

41"आपने जो यह देखा था कि उस मूर्ति के पैर और पंजे थोड़े मिट्टी के और थोड़े लोहे के बने हैं, उसका मतलब यह है कि वह चौथा राज्य एक बटा हुआ राज्य होगा। इसमें कुछ तो लोहे की शक्ति होगी क्योंकि आपने मिट्टी मिला लोहा देखा है। 42उस मूर्ति के पैर के पंजों के अगले भाग जो थोड़े लोहे और थोड़े मिट्टी के बने थे, इसका अर्थ यह है कि वह चौथा राज्य थोड़ा तो लोहे के समान शक्तिशाली होगा और थोड़ा मिट्टी के समान दुर्बल। 43आपने लोहे को मिट्टी से मिला हुआ देखा था किन्तु जैसे लोहा और मिट्टी पूरी तरह कभी आपस में नही मिलते, उस चौथे राज्य के लोग वैसे ही मिले जुले होंगे। किन्तु एक जाति के रुप में वे लोग आपस में एक जुट नहीं होंगे।

44"चौथे राज्य के उन राजाओं के समय में ही स्वर्ग का परमेश्वर एक दूसरे राज्य की स्थापना कर देगा। इस राज्य का कभी अंत नहीं होगा और यह सदा-सदा बना रहेगा! यह एक ऐसा राज्य होगा जो कभी किसी दूसरे समूह के लोगों के हाथ में नहीं जायेगा। यह राज्य उन दूसरे राज्य को कुचल देगा। यह उन राज्यों का विनाश कर देगा। किन्तु वह राज्य अपने आप सदा-सदा बना रहेगा।

45"हे राजा नबूकदनेस्सर, आपने पहाड़ से उखड़ी
हुई चट्टान तो देखी। किसी व्यक्ति ने उस चट्टान को
उखाड़ा नहीं! उस चट्टान ने लोहे को, काँसे को, मिट्टी
को, चाँदी को ओर सोने को टुकड़े-टुकड़े कर दिया
था। इस प्रकार से महान परमेश्वर ने आपको वह दिखाया
हैं जो भविष्य में होने वाला है। यह सपना सच्चा है और
आप सपने की इस व्याख्या पर भरोसा कर सकते हैं।"
46इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को
झुक कर नमस्कार किया। राजा ने दानिय्येल की प्रशंसा
की। राजा ने यह आज्ञा दी कि दानिय्येल को सम्मानित
करने के लिये एक भेंट और सुगन्ध प्रदान की जाये।
47फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, "मुझे निश्चयपूर्वक
ज्ञान हो गया है कि तेरा परमेश्वर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण
और शक्तिशाली परमेश्वर है। वह सभी राजाओं का
यहोवा है। वह लोगों को उन बातों के बारे में बताता है,
जिन्हें वे नहीं जान सकते। मुझे पता है कि यह सच है।
क्योंकि तू मुझे भेद की इन बातों को बता सका।"
48इसके बाद उस राजा ने दानिय्येल को अपने राज्य
में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया तथा राजा
ने बहुत से बहुमूल्य उपहार भी दानिय्येल को दिये।
नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को बाबुल के समूचे प्रदेश
का शासक नियुक्त कर दिया। तथा उसने दानिय्येल
को बाबुल के सभी पण्डितों का प्रधान बना दिया।
49दानिय्येल ने राजा से विनती की कि वह शद्रक,
मेशक और अबेदनगो को बाबुल प्रदेश के महत्त्वपूर्ण
हाकिम बना दें। सो राजा ने वैसा ही किया जैसा दानिय्येल
ने चाहा था। दानिय्येल स्वयं उन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में
हो गया था जो राजा के निकट रहा करते थे।

सोने की प्रतिमा और धधकती भट्टी

3 राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक प्रतिमा बनवा
रखी थी। वह प्रतिमा साठ हाथ ऊँची और छः हाथ
चौड़ी थी। नबूकदनेस्सर ने उस प्रतिमा को बाबुल प्रदेश
में दूरा के मैदान में स्थापित कर दिया 2और फिर राजा ने
प्रांत के राज्यपालों, मुखियाओं, अधिपतियों, सलाहकारों,
खजांचियों, न्यायाधीशों, शासकों तथा दूसरे सभी क्षेत्रीय
अधिकारियों को अपने राज्य में आकर इकट्ठा होने के
लिये बुलवा भेजा। राजा चाहता था कि वे सभी लोग प्रतिमा
के प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित हों।

3सो वे सभी लोग आये और उस प्रतिमा के आगे खड़े
हो गये जिसे राजा नबुकदनेस्सर ने प्रतिष्ठित कराया
था। 4फिर उस ढंढोरची ने, जो राजा की घोषनाएँ प्रसारित
किया करता था, ऊँचे स्वर में कहा, "सुनों, सुनों, अरे
ओ अलग अलग जातियों और भाषा समूह के लोगों!
तुम्हें जो करने की आज्ञा दी गयी है, वह यह है, 5"तुम
जब सभी संगीत वाद्यों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें तत्काल
झुक कर प्रणाम करना होगा। तुम जब नरसिंगों, बाँसुरियों,
सितारो, सात तारों वाले बाजो, वीणाओ, और
मशक-शहनाई तथा अन्य सभी प्रकार के बाजों की
आवाज़ सुनो तो तुम्हें सोने की इस प्रतिमा की पूजा करनी
है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा राजा नबूकदनेस्सर ने की
है। 6यदि कोई व्यक्ति इस सोने की प्रतिमा को झुक कर
प्रणाम नहीं करेगा और इसे नहीं पूजेगा तो उस व्यक्ति
को तुरंत ही धधकती हुई भट्टी में फेंक दिया जायेगा।"
7सो, जैसे ही वे लोग नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों,
सात तारों वाले बाजों, मशक शहनाइयों और दूसरी
तरह के संगीत-वाद्यों को सुनते, नीचे झुक जाते और
सोने की उस प्रतिमा की पूजा करते। राजा
नबूकदनेस्सर द्वारा स्थापित सोने की उस प्रतिमा की,
सारी प्रजा, सभी जातियाँ और वहाँ के हर प्रकार की
भाषा बोलने वाले लोग पूजा किया करते थे।
8इसके बाद, कुछ कसदी लोग राजा के पास आये।
उन लोगों ने यहूदियों के विरोध में राजा के कान भरे।
9राजा नबूकदनेस्सर से उन्होंने कहा, "हे राजन, आप
चिरंजीवी हों! 10हे राजन, आपने एक आदेश दिया था,
आपने कहा था कि हर वह व्यक्ति जो नरसिंगों,
बाँसुरियों, सितारों, सात तारों वाले बाजों, वीणाओं, मशक
शहनाइयों और दूसरे सभी तरह के वाद्य-यन्त्रों की
ध्वनि को सुनता है, उसे सोने की प्रतिमा के आगे झुक
कर उसकी पूजा करनी चाहिये। 11आपने यह भी कहा
था कि यदि कोई व्यक्ति सोने की प्रतिमा के आगे झुक
कर उसकी पूजा नहीं करेगा तो उसे किसी धधकती
भट्टी में झोंक दिया जायेगा। 12हे राजन, यहाँ कुछ ऐसे
यहूदी हैं जो आपके इस आदेश पर ध्यान नहीं देते।
आपने उन यहूदियों को बाबुल प्रदेश में महत्त्वपूर्ण
हाकिम बनाया हुआ है। ऐसे लोगों के नाम हैं-शद्रक,
मेशक और अबेदनगो। ये लोग आपके देवताओं की
पूजा नहीं करते और जिस सोने की

प्रतिमा को आप ने स्थापित किया है, वे न तो उसके आगे झुकते हैं और न ही उसकी पूजा करते हैं।"

13इस पर नबूकदनेस्सर क्रोध में आग-बबूला हो उठा। उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बुलवा भेजा। सो उन लोगों को राजा के सामने लाया गया। 14राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा, "अरे शद्रक, मेशक और अबेदनगो। क्या यह सच है कि तुम मेरे देवताओं की पूजा नहीं करते? और क्या यह भी सच है कि तुम मेरे द्वारा स्थापित करायी गयी सोने की प्रतिमा के आगे न तो झुकते हो, और न ही उसकी पूजा करते हो? 15अब देखो, तुम जब नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात तार के बाजों, वीणाओं, मशक-शहनाइयों तथा हर तरह के दूसरे वाद्य-यन्त्रों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा करनी होगी। यदि तुम मेरे द्वारा बनवाई गयी उस मूर्ति की पूजा करने को तैयार हो, तब तो अच्छा है किन्तु यदि उसकी पूजा नहीं करते हो तो तुम्हें तत्काल ही धधकती हुई भट्टी में झोंक दिया जायेगा। फिर तुम्हें कोई भी देवता मेरी शक्ति से बचा नहीं पायेगा!"

16शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने उत्तर देते हुए राजा से कहा, "हे नबूकदनेस्सर, हमें तुझसे इन बातों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है! 17यदि, हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं, उसका अस्तित्व है तो वह इस जलती हुई भट्टी से हमें बचा लेने में समर्थ है। सो अरे ओ राजा, वह हमें तेरी ताकत से बचा लेगा। 18किन्तु राजा, हम यह चाहते हैं कि तू इतना जान ले कि यदि परमेश्वर हमारी रक्षा न भी करे तो भी हम तेरे देवताओं की सेवा से इन्कार करते हैं। सोने की जो प्रतिमा तूने स्थापित कराई है हम उसकी पूजा नहीं करेंगे।"

19इस पर तो नबूकदनेस्सर क्रोध से भड़क उठा। उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर घृणा से देखा। उसने आज्ञा दी कि भट्टी को जितनी वह तपा करती है, उसे उससे सात गुणा अधिक दहकाया जाये। 20इसके बाद नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना के कुछ बहुत मज़बूत सैनिकों को आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँध लें। राजा ने उन सैनिकों को आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को धधकती भट्टी में झोंक दें।

21सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँध दिया गया और फिर धधकती भट्टी में धकेल दिया गया। उन्होंने अपने वस्त्र-अंगरखे, पतलूनें और टोप तथा अन्य कपड़े पहन रखे थे। 22जिस समय राजा ने यह आज्ञा दी थी उस समय वह बहुत क्रोधित था, इसलिये उन्होंने तत्काल ही भट्टी को बहुत अधिक तपा लिया! आग इतनी अधिक भड़क रही थी कि उसकी लपटों से वे शक्तिशाली सैनिक मर गये! वे सैनिक उस समय मारे गये जब उन्होंने आग के पास जाकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो को आग में धकेला था। 23शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग में गिर गये थे। उन्हें बहुत कस कर बाँधा हुआ था।

24इस पर राजा नबूकदनेस्सर उछल कर अपने पैरो, पर खड़ा हो गया। उसे बहुत आश्चर्य हो रहा था। उसने अपने मंत्रियों से पूछा, "यह ठीक है न कि हमने तो बस तीन व्यक्तियों को बंधवाया था और आग में उन्हीं तीन को डलवाया था?"

उसके मंत्रियों ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"

25राजा बोला, "देखो, मुझे तो आग के भीतर इधर-उधर घूमते हुए चार व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं। वे बंधे हुए नहीं हैं और आग उन का कुछ नहीं बिगाड़ पाई है। देखो, वह चौथा पुरुष तो किसी स्वर्गदूत जैसा दिखाई दे रहा है!"

26इसके बाद नबूकदनेस्सर उस जलती हुई भट्टी के मुँह पर गया। उसने ज़ोर से पुकार कर कहा, "शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बाहर आओ! परम प्रधान परमेश्वर के सेवकों बाहर आओ!

सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग से बाहर निकल आये। 27जब वे बाहर आये तो प्रांत के राज्यपालों, हाकिमों, आधिपतियों और राजा के मंत्रियों ने उनके चारों तरफ़ भीड़ लगा दी। वे देख पा रहे थे कि उस आग ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को छुआ तक नहीं है। उनके शरीर जरा भी नहीं जले थे। उनके बाल झुलसे तक नहीं थे। उनके कपड़ों को आँच तक नहीं आई थी। उनके शरीर से ऐसी गंध तक नहीं निकल रही थी जैसे वे आग के आस-पास भी गए हों।

28फिर नबूकदनेस्सर ने कहा, "शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की स्तुति करो। उनके परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर, अपने सेवकों की आग से रक्षा की है! इन तीनों पुरुषों की अपने परमेश्वर में आस्था थी। इन्होंने मेरे आदेश को मानने से मना कर दिया और दूसरे किसी देवता की सेवा या पूजा करने के बजाय उन्होंने मरना स्वीकार किया। 29सो आज से मैं यह

नियम बनाता हूँ: किसी भी देश अथवा किसी भी भाषा को बोलने वाला कोई व्यक्ति यदि शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के विरोध में कुछ कहेगा तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे और उसके घर को उस समय तक तोड़ा-फोड़ा जायेगा, जब तक वह मलबे और राख का ढेर मात्र न रह जाये। कोई भी दूसरा देवता अपने लोगों को इस तरह
नहीं बचा सकता।" **30**इसके बाद राजा ने शद्रक, मेशक
और अबेदनगो को बाबुल के प्रदेश में और अधिक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान कर दिये।

एक पेड़ के बारे में नबूकदनेस्सर का स्वप्न

4 राजा नबूकदनेस्सर ने बहुत सी जातियों और दूसरी भाषा बोलने वाले लोगों को, जो सारी दुनिया में बसे हुए थे, यह पत्र भेजा शुभकामनाएँ:

2परम प्रधान परमेश्वर ने मेरे साथ जो आश्चर्यजनक अद्भुत बातें की हैं, उनके बारे में तुम्हें बताते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता है।

3 अद्भुत चमत्कार किये हैं!
परमेश्वर शक्ति पूर्ण चमत्कार किये हैं!
परमेश्वर का राज्य सदा टिका रहता है;
परमेश्वर का शासन
पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

4मैं, नबूकदनेस्सर, अपने महल में था। मैं
प्रसन्न और सफल था। **5**मैंने एक सपना देखा
जिसने मुझे डरा दिया। मैं अपने बिस्तर में सो रहा था। मैंने दर्शनों को देखा। जो कुछ मैंने
देखा था, उसने मुझे बहुत डरा दिया। **6**सो मैंने
यह आज्ञा दी कि बाबुल के सभी बुद्धिमान लोगों को मेरे पास लाया जाये ताकि वे मुझे मेरे स्वप्न
का फल बतायें। **7**जब तांत्रिक और कसदी लोग
मेरे पास आये तो मैंने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया। किन्तु वे लोग मुझे मेरे सपने का
अर्थ नहीं बता पाये। **8**अंत में दानिय्येल मेरे पास
आया (मैंने अपने ईश्वर को सम्मानित करने के लिए दानिय्येल को बेलतशस्सर नाम दिया था। पवित्र ईश्वरों की आत्मा का उसमें निवास है।) दानिय्येल को मैंने अपना सपना कह
सुनाया। **9**मैंने उसे कहा,

"हे बेलतशस्सर, तू सभी तांत्रिकों में सबसे बड़ा है। मुझे पता है कि तुझमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा वास करती है। मैं जानता हूँ कि किसी भी रहस्य को समझना तेरे लिये कठिन नहीं है। मैंने जो सपना देखा था, वह यह है। तू मुझे इसका अर्थ
समझा। **10**जब मैं अपने बिस्तर में लेटा हुआ था
तो मैंने जो दिव्य दर्शन देखे, वे ये हैं। मैंने देखा कि मेरे सामने धरती के बीचों-बीच एक वृक्ष
खड़ा है। वह वृक्ष बहुत लम्बा था। **11**वृक्ष बड़ा
होता हुआ एक विशाल मज़बूत वृक्ष बन गया। वृक्ष की चोटी आकाश छूने लगी। उस वृक्ष को
धरती पर कहीं से भी देखा जा सकता था। **12**वृक्ष
की पत्तियाँ सुन्दर थीं। वृक्ष पर बहुत अच्छे फल बहुतायात में लगे थे और उस वृक्ष पर हर किसी के लिए भरपूर खाने को था। जंगली जानवर वृक्ष के नीचे आसरा पाये हुए थे और वृक्ष की शाखाओं पर चिड़ियों का बसेरा था। हर पशु पक्षी उस वृक्ष से ही भोजन पाता था।

13"अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे दर्शन में मैं उन वस्तुओं को देख रहा था और तभी एक पवित्र स्वर्गदूत को मैंने स्वर्ग से नीचे उतरते हुए देखा।
14वह बड़े ऊँचे स्वर में बोला। उसने कहा, 'वृक्ष
को काट फेंको। इसकी टहनियों को काट डालो। इसकी पत्तियों को नोच लो। इसके फलों को चारों ओर बिखेर दो। इस वृक्ष के नीचे आसरा पाये हुए पशु कहीं दूर भाग जायेंगे। इसकी शाखाओं पर
बसेरा किये हुए पक्षी कहीं उड़ जायेंगे। **15**किन्तु
इसके तने और इसकी जड़ों को धरती में रहने दो। इसके चारों ओर लोहे और काँसे का एक बंधेज बांध दो। अपने आस पास उगी घास के साथ इसका तना और इसकी जड़ें धरती में रहेंगी। जंगली पशुओं और पेड़ पौधों के बीच यह खेतों में
रहेगा। ओस से वह नम हो जायेगा। **16**वह अधिक
समय तक मनुष्य की तरह नहीं सोचेगा। उसका मन पशु के मन जैसा हो जायेगा। उसके ऐसा ही रहते हुए सातऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेगा।'

17"एक पवित्र स्वर्गदूत ने इस दण्ड की घोषणा की थी ताकि धरती के सभी लोगों को यह पता चल जाये कि मनुष्यों के राज्यों के ऊपर परम

प्रधान परमेश्वर शासन करता है। परमेश्वर जिसे भी चाहता है। इन राज्यों को दे देता है और परमेश्वर उन राज्यों पर शासन करने के लिये विनम्र मनुष्यों को चुनता है।

18"बस मैंने (राजा नबूकदनेस्सर ने) सपने में यही देखा है। अब हे बेलतशस्सर! तू मुझे यह बता कि इस सपने का अर्थ क्या है? मेरे राज्य का कोई भी बुद्धिमान पुरुष मुझे इस सपने का फल नहीं बता पा रहा है। किन्तु हे बेलतशस्सर, तू मेरे इस सपने की व्याख्या कर सकता है क्योंकि तुझमें पवित्र परमेश्वर की आत्मा निवास करती है।"

19तब दानिय्येल (जिसका नाम बेलतशस्सर भी था) थोड़ी देर के लिए एक दम चुप हो गया। जिन बातों को वह सोच रहा था, वे उसे व्याकुल किये डाल रही थीं। सो राजा ने उससे कहा, "हे बेलतशस्सर (दानिय्येल), तू उस सपने या उस सपने के फल से भयभीत मत हो।"

इस पर बेलतशस्सर (दानिय्येल) ने राजा को उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, काश यह सपना तेरे शत्रुओं पर पड़े और इसका फल, जो तेरे विरोधी हैं, उनको मिले!" 20-21आपने सपने में एक वृक्ष देखा था। वह वृक्ष बड़ा हुआ और मज़बूत बन गया। वृक्ष की चोटी आसमान छू रही थी। धरती में हर कहीं से वह वृक्ष दिखाई देता था। उसकी पत्तियाँ सुन्दर थीं और उस पर बहुतायत में फल लगे थे। उन फलों से हर किसी को पर्याप्त भोजन मिलता था। जंगली पशुओं का तो वह घर ही था और उसकी शाखाओं पर चिड़ियों ने बसेरा किया हुआ था। तुमने सपने में ऐसा वृक्ष देखा था। 22हे राजन, वह वृक्ष आप ही हैं। आप महान और शक्तिशाली बन चुके हैं। आप उस ऊँचे वृक्ष के समान हैं जिसने आकाश छू लिया है और आपकी शक्ति धरती के सुदूर भागों तक पहुँची हुई है।

23"हे राजन, आपने एक पवित्र स्वर्गदूत को आकाश से नीचे उतरते देखा था। स्वर्गदूत ने कहा था वृक्ष को काट डालो और उसे नष्ट कर दो। वृक्ष के तने पर लोहे और काँसे का बन्धेज डाल दो और इसके तने और जड़ों को धरती में ही छोड़ दो। खेत में घास के बीच इसे रहने दो। ओस से ही यह नमी लेता रहेगा। वह किसी जंगली पशु के रुप में रहा करेगा। इसके इसी हाल में सात ऋतु-चक्र (साल) बीत जायेंगे।

24"हे राजा, आपके स्वप्न का फल यही है। परम प्रधान परमेश्वर ने मेरे स्वामी राजा के प्रति इन बातों के घटने का आदेश दिया है। 25हे राजा नबूकदनेस्सर, प्रजा से दूर चले जाने के लिये आपको विवश किया जायेगा। जंगली पशुओं के बीच आपको रहना होगा। मवेशियों के समान आप घास से पेट भरेंगे और ओस से भीगेंगे। सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे और फिर उसके बाद तुम यह पाठ पढ़ोगे कि परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के साम्राज्यों पर शासन करता है और वह जिसे भी चाहता है, उसको राज्य दे देता है।

26"वृक्ष के तने और उसकी जड़ों को धरती में छोड़ देने के आदेश का अर्थ यह है-कि आपका साम्राज्य आपको वापस मिल जायेगा। किन्तु यह उसी समय होगा जब तुम यह जान जाओगे कि तुम्हारे राज्य पर परम प्रधान परमेश्वर का ही शासन है। 27इसलिये हे राजन, आप कृपा करके मेरी सलाह मानें। मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि आप पाप करना छोड़ दें और जो उचित है, वही करें। कुकर्मो का त्याग कर दें। गरीबों पर दयालु हों। तभी आप सफल बने रह सकेंगे।"

28ये सभी बातें राजा नबूकदनेस्सर के साथ घटीं। 29-30इस सपने के बारह महीने बाद जब राजा नबूकदनेस्सर बाबुल में अपने महल की छत पर घूम रहा था, तो छत पर खड़े-खड़े ही वह कहने लगा, "बाबुल को देखो! इस महान नगर का निर्माण मैंने किया है। यह महल मेरा है! मैंने अपनी शक्ति से इस विशाल नगर का निर्माण किया है। इस स्थान का निर्माण मैंने यह दिखाने के लिये किया है कि मैं कितना बड़ा हूँ!"

31ये शब्द अभी उसके मुँह में ही थे कि एक आकाशवाणी हुई। आकाशवाणी ने कहा, "राजा नबूकदनेस्सर, तेरे साथ ये बातें घटेंगी। राजा के रूप में तुझसे तेरी शक्ति छीन ली गयी है। 32तुझे प्रजा से दूर जाना होगा। जंगली पशुओं के साथ तेरा निवास होगा। तू ढोरों की तरह घास खायेगा।

इससे पहले कि तू सबक सीखे, सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे। तब तू यह समझेगा कि मनुष्य के राज्यों पर परम प्रधान परमेश्वर शासन करता है और परम प्रधान परमेश्वर जिसे चाहता है, उसे राज्य दे देता है।"

33फिर तत्काल ही ये बातें घट गयीं। नबूकदनेस्सर को लोगों से दूर जाना पड़ा। उसने ढ़ोरों की तरह घास खाना शुरू कर दिया। वह ओस में भीगा। किसी उकाब के पंखों के समान उसके बाल बढ़ गये और उसके नाखून ऐसे बढ़ गये जैसे किसी पक्षी के पंजों के नाखून होते हैं।

34फिर उस समय के अंत में मैं (नबूकदनेस्सर) ने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा। मैं फिर सहीं ढ़ंग से सोचने विचारने लगा। सो मैंने परम प्रधान परमेश्वर की स्तुति की, जो सदा अमर है, मैंने उसे आदर और महिमा प्रदान की परमेश्वर शासन सदा करता है! उसका राज्य पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

35 इस धरती के लोग सचमुच बडे नहीं हैं।
परमेश्वर लोगों के साथ
जो कुछ चाहता है वह करता है।
स्वर्ग की शक्तियों से कोई भी
रोक नहीं पाता है।
उसका सशक्त हाथ जो कुछ वह करता है
उस पर कोई नहीं प्रश्न करता है।

36सो, उस अवसर, पर परमेश्वर ने मुझे मेरी बुद्धि फिर दे दी और उसने एक राजा के रूप में मेरा बड़ा मान, सम्मान और शक्ति भी वापस लौटा दी। मेरे मन्त्री और मेरे राजकीय लोग फिर मेरे पास आने लगे। मैं फिर से राजा बन गया। मैं पहले से भी अधिक महान और शक्तिशाली हो गया था 37और देखो अब मैं, नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा की स्तुति करता हूँ तथा उसे आदर और महिमा देता हूँ। वह जो कुछ करता है, ठीक करता है। वह सदा न्यायपूर्ण है। उसमें अहंकारी लोगों को विनम्र बना देने की क्षमता हैर!

दीवार पर अभिलेख

5 राजा बेलशस्सर ने अपने एक हजार अधिकारियों को एक बड़ी दावत दी। राजा उनके साथ दाखमधु पी रहा था। 2राजा बेलशस्सर ने दाखमधु पीते हुए अपने सेवकों को सोने और चाँदी के प्याले लाने को कहा। ये वे प्याले थे जिन्हें उसके दादा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर से लिया था। राजा बेलशस्सर चाहता था कि उसके शाही लोग, उसकी पत्नियाँ, तथा उसकी दासियाँ इन प्यालों से दाखमधु पियें। 3सो सोने के वे प्याले लाये गये जिन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर से उठाया गया था। फिर राजा ने और उसके अधिकारियों ने, उसकी रानियों ने तथा उसकी दासियों ने, उन प्यालों से दाखमधु पिया किया। 4दाखमधु पीते हुए वे अपने देवताओं की मूर्तियों की स्तुति कर रहे थे। उन्होंने उन देवताओं की स्तुति की जो देवता सोने, चाँदी, काँसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर के मूर्ति मात्र थे।

5उसी समय अचानक किसी पुरुष का एक हाथ प्रकट हुआ और दीवार पर लिखने लगा। उसकी उंगलियाँ दीवार के लेप को कुरेदती हुई शब्द लिखने लगीं। दीवार के पास राजा के महल में उस हाथ ने दीवार पर लिखा। हाथ जब लिख रहा था तो राजा उसे देख रहा था।

6राजा बेलशस्सर बहुत भयभीत हो उठा। डर से उसका मुख पीला पड़ गया और उसके घुटने इस प्रकार काँपने लगे कि वे आपस में टकरा रहे थे। उसके पैर इतने बलहीन हो गये कि वह खड़ा भी नहीं रह पा रहा था। 7राजा ने तांत्रिकों और कसदियों को अपने पास बुलवाया और उनसे कहा, "मुझे जो काई भी इस लिखावट को पढ़कर बताएगा और मुझे उसका अर्थ समझा देगा, मैं उसे पुरस्कार दूँगा। उस व्यक्ति को मैं बैंगनी पोशाक भेंट करुँगा। मैं उसके गले में सोने का हार पहनाऊँगा और मैं उसे अपने राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक बना दूँगा।"

8सो राजा के सभी बुद्धिमान पुरुष वहाँ आ गये किन्तु वे उस लिखावट को नहीं पढ़ सके। वे समझ ही नहीं सके कि उसका अर्थ क्या हैं। 9राजा बेलशस्सर के हाकिम चक्कर में पड़े हुए थे और राजा तो और भी अधिक भयभीत और चिंतित था। उसका मुख डर से पीला पड़ा हुआ था।

10तभी जहाँ वह दावत चल रही थी, वहाँ राजा की माँ आई। उसने राजा और उसके राजकीय अधिकारियों की आवाज़ें सुन लीं थीं, उसने कहा, "हे राजा, चिरंजीव रह! डर मत! तू अपने मुँह को डर से इतना पीला मत पड़ने दे! 11देख, तेरे राज्य में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें

पवित्र ईश्वरों की आत्मा बसती है। तेरे पिता के दिनों में इस व्यक्ति ने यह दर्शाया था कि वह रहस्यों को समझ सकता है। उसने यह दिखा दिया था कि वह बहुत चुस्त और बुद्धिमान है। उसने यह प्रकट कर दिया था कि इन बातों में वह ईश्वर के समान है। तेरे दादा राजा नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को सभी बुद्धिमान पुरुषों पर मुखिया नियुक्त किया था। वह सभी तांत्रिकों और कसदियों पर हुकूमत करता था। 12मैं जिस व्यक्ति के बारे में बातें कर रही हूँ उसका नाम दानिय्येल है। किन्तु राजा ने उसे बेलतशस्सर का नाम दे दिया था। बेलतशस्सर (दानिय्येल) बहुत चुस्त है और वह बहुत सी बातें जानता है। वह स्वप्नों की व्याख्या कर सकता है। पहेलियों को समझा सकता है और कठिन से कठिन हलों को सुलझा सकता है। तू दानिय्येल को बुला। दीवार पर जो लिखा है, उसका अर्थ तुझे वही बतायेगा।"

13सो वे दानिय्येल को राजा के पास ले आये। राजा ने दानिय्येल से कहा, "क्या तेरा नाम दानिय्येल है? मेरे पिता महाराज यहूदा से जिन लोगों को बंदी बनाकर लाये थे, क्या तू उन्हीं में से एक है? 14मैंने सुना है, कि ईश्वरों की आत्मा का तुझमें निवास है और मैंने यह भी सुना है कि तू रहस्यों को समझता है, तू बहुत चुस्त और बुद्धिमान है। 15बुद्धिमान पुरुष और तांत्रिकों को इस दीवार की लिखावट को समझाने के लिए मेरे पास लाया गया। मैं चाहता था कि वे लोग उस लिखावट का अर्थ बतायें। किन्तु दीवार पर लिखी इस लिखावट की व्याख्या वे मुझे नहीं दे पाए। 16मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू बातों के अर्थ की व्याख्या कर सकता है और तू अत्यंत कठिन समस्याओं के उत्तर भी ढूँढ सकता है। यदि दीवार की इस लिखावट को तू पढ़ दे और इसका अर्थ तू मुझे समझा दे तो मैं तुझे ये वस्तुएँ दूँगा। मैं तुझे बैंगनी रंग की पोशाक प्रदान करुँगा, तेरे गले में सोने का हार पहनाऊँगा। फिर तो तू इस राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक बन जायेगा।"

17इसके बाद दानिय्येल ने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "हे राजा बेलशस्सर, तुम अपने उपहार अपने पास रखो, अथवा चाहो तो उन्हें किसी और को दे दो। मैं तुम्हें वैसे ही दीवार की लिखावट पढ़ दूँगा और उसका अर्थ क्या है, यह तुम्हें समझा दूँगा।

18"हे राजन, परम प्रधान परमेश्वर ने तुम्हारे दादा नबूकदनेस्सर को एक महान शक्तिशाली राजा बनाया था। परमेश्वर ने उन्हें अत्याधिक महत्त्वपूर्ण बनाया था। 19बहुत से देशों के लोग और विभिन्न भाषाएँ बोलनेवाले नबूकदनेस्सर से डरा करते थे क्योंकि परम प्रधान परमेश्वर ने उसे एक बहुत बड़ा राजा बनाया था। यदि नबूकदनेस्सर किसी को मार डालना चाहता तो वह मार दिया जाता और यदि वह चाहता कि कोई व्यक्ति जीवित रहे तो उसे जीवित रहने दिया जाता। यदि वह लोगों को बड़ा बनाना चाहता तो वह उन्हें बड़ा बना देता और यदि वह चाहता कि उन्हें महत्त्वहीन कर दिया जाये तो वह उन्हें महत्त्वहीन कर देता।

20किन्तु नबूकदनेस्सर को अभिमान हो गया और वह हठीला बन गया। सो परमेश्वर द्वारा उससे उसकी शक्ति छीन ली गयी। उसे उसके राज सिंहासन से उतार फेंका गया और उसे महिमा विहीन बना दिया गया। 21इसके बाद लोगों से दूर भाग जाने के लिये नबूकदनेस्सर को विवश किया गया। उसकी बुद्धि किसी पशु की बुद्धि जैसी हो गयी। वह जंगली गधों के बीच में रहने लगा और ढोरों की तरह घास खाता रहा। वह ओस में भीगा। जब तक उसे सबक नहीं मिल गया, उसके साथ ऐसा ही होता गया। फिर उसे यह ज्ञान हो गया कि मनुष्य के राज्य पर परम प्रधान परमेश्वर का ही शासन है और साम्राज्यों के ऊपर शासन करने के लिये वह जिस किसी को भी चाहता है, भेज देता है।

22"किन्तु हे बेलशस्सर, तुम तो इन बातों को जानते ही हो! तुम नबूकदनेस्सर के पोते हो किन्तु फिर भी तुमने अपने आप को विनम्र नहीं बनाया। 23नहीं! तुम विनम्र तो नहीं हुए और उलटे स्वर्ग के यहोवा के विरुद्ध हो गये। तुमने यहोवा के मन्दिर के पात्रों को अपने पास लाने की आज्ञा दी और फिर तुमने, तुम्हारे शाही हाकिमों ने, तुम्हारी पत्नियों ने, तुम्हारी दासियों ने उन पात्रों में दाखमधु पीया। तुमने चाँदी, सोने, काँसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर के देवताओं के गुण गाये। वे सचमुच के देवता नहीं है। वे देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते तथा वे कुछ समझ भी नहीं सकते हैं। तुमने उस परमेश्वर को आदर नहीं दिया, जिसका तुम्हारे जीवन या जो कुछ भी तुम करते हो, उस पर अधिकार है। 24सो इसलिए, परमेश्वर ने उस हाथ को भेजा जिसने दीवार पर लिखा। 25दीवार पर जो शब्द लिखे गये हैं, वे ये हैं: 'मने, मने तकेल, ऊपर्सीन।'

26"इन शब्दों का अर्थ यह है, 'मने' अर्थात् जब तेरे
राज्य का अंत होगा, परमेश्वर ने तब तक के दिन
गिन लिये हैं।
27'तकेल': अर्थात् तराजू पर तुझे तोल लिया गया
है और तू पूरा नहीं उतरा है।
28'ऊपर्सीन': अर्थात् तुझसे तेरा राज्य छीना जा
रहा है और उसका बंटवारा हो रहा है। यह राज्य
मादियों और फारसियों के लोगों को दे दिया जायेगा।"
29इसके बाद बेलशस्सर ने आज्ञा दी कि दानिय्येल
को बैंगनी वेशभूषा पहनायी जाये। उसके गले में सोने
का हार पहना दिया जाय और यह घोषणा कर दी गयी
कि वह राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक होगा।
30उसी रात बाबुल की प्रजा के स्वामी राजा बेलशस्सर
का वध कर दिया गया। 31मादे का रहने वाला एक
व्यक्ति जिसका नाम दारा था और जिसकी आयु कोई
बासठ वर्ष की थी, वहाँ का नया राजा बना।

दानिय्येल और सिंह

6 दारा के मन में विचार आया कि कितना अच्छा रहे
यदि एक सौ बीस प्रांत-अधिपतियों के द्वारा समूचे
राज्य की हुकूमत को चलाया जाये 2और इसके लिये
उसने उन एक सौ बीस प्रांत-अधिपतियों के ऊपर शासन
करने के लिये तीन व्यक्तियों को अधिकारी नियुक्त कर
दिया। इन तीनों देख-रेख करने वालों में एक था दानिय्येल।
इन तीन व्यक्तियों की नियुक्ति राजा ने इसलिये की थी
कि कोई उसके साथ छल न कर पाये और उसके राज्य
की कोई भी हानि न हो। 3दानिय्येल ने यह कर दिखाया
कि वह दूसरे पर्यवेक्षकों से अधिक उत्तम है। दानिय्येल ने
यह काम अपने अच्छे चरित्र और बड़ी योग्यताओं के
द्वारा सम्पन्न किया। राजा दानिय्येल से इतना अधिक
प्रभावित हुआ कि उसने दानिय्येल को सारी हुकूमत का
हाकिम बनाने की सोची। 4किन्तु जब दूसरे पर्यवेक्षकों
और प्रांत-अधिपतियों ने इसके बारे में सुना तो उन्हें
दानिय्येल से ईर्ष्या होने लगी। वे दानिय्येल को कोसने के
लिये कारण ढूँढने का जतन करने लगे। सो जब दानिय्येल
सरकारी कामकाज से कहीं बाहर जाता तो वे उसके द्वारा
किये गये कामों पर नज़र रखने लगे। किन्तु फिर भी वे
दानिय्येल में कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाये। सो वे उस पर कोई
गलत काम करने का दोष नहीं लगा सके। दानिय्येल
बहुत ईमानदार और भरोसेमंद व्यक्ति था। उसने राजा के
साथ कभी कोई छल नहीं किया। वह कठिन परिश्रमी था।
5आखिरकार उन लोगों ने कहा, "दानिय्येल पर
कोई बुरा काम करने का दोष लगाने की कोई वजह
हम कभी नहीं ढूँढ़ पायेंगे। इसलिये हमें शिकायत के
लिए कोई ऐसी बात ढूँढनी चाहिये जो उसके परमेश्वर
के नियमों से सम्बन्ध रखती हो।"
6सो वे दोनों पर्यवेक्षक और वे प्रांत-अधिपति टोली
बना कर राजा के पास गये। उन्होंने कहा, "हे राजा दारा,
तुम अमर रहो! 7हम सभी पर्यवेक्षक, हाकिम, प्रांत-
अधिपति, मंत्री और राज्यपाल किसी एक बात पर सहमत
हैं। हमारा विचार है कि राजा को यह नियम बना देना
चाहिये और हर व्यक्ति को इस नियम का पालन करना
चाहिये। वह नियम यह हैं, 'यदि अगले तीस दिनों तक
कोई भी व्यक्ति हे राजा, आपको छोड़ किसी और देवता
या व्यक्ति की प्रार्थना करे तो उस व्यक्ति को शेरों की
माँद में डाल दिया जाये। 8अब हे राजा! जिस कागज पर
यह नियम लिखा है, तुम उस पर हस्ताक्षर कर दो। इस
तरह से यह नियम कभी बदला नहीं जा सकेगा। क्योंकि
मीदियों और फ़ारसियों के नियम न तो बदले जा सकते हैं
और न ही मिटाए जा सकते हैं।" 9सो राजा दारा ने यह
नियम बना कर उस पर हस्ताक्षर कर दिये।
10दानिय्येल तो सदा ही प्रतिदिन तीन बार परमेश्वर
से प्रार्थना किया करता था। हर दिन तीन बार दानिय्येल
अपने घुटनों के बल झुक कर अपने परमेश्वर की
प्रार्थना करता और उसका गुणगान करता था।
दानिय्येल ने जब इस नये नियम के बारे में सुना तो
वह अपने घर चला गया। दानिय्येल अपने मकान
की छत के ऊपर, अपने कमरे में चला गया। दानिय्येल
उन खिड़कियों के पास गया जो यरूशलेम की तरफ़
खुलती थीं। फिर वह अपने घुटनों के बल झुका और
जैसे सदा किया करता था, उसने वैसे ही प्रार्थना की।
11फिर वे लोग झुण्ड बना कर दानिय्येल के यहाँ जा
पहुँचे। वहाँ उन्होंने दानिय्येल को प्रार्थना करते और
परमेश्वर से दया माँगते पाया। 12बस फिर क्या था। वे लोग
राजा के पास जा पहुँचे और उन्होंने राजा से उस नियम के
बारे में बात की जो उसने बनाया था। उन्होंने कहा, "हे
राजा दारा, आपने एक नियम बनाया है। जिसके अनुसार
अगले तीस दिनों तक यदि कोई व्यक्ति किसी देवता से

अथवा तेरे अतिरिक्त किसी व्यक्ति से प्रार्थना करता है तो, राजन, उसे शेरों की माँद में फेंकवा दिया जायेगा। बताइये क्या आपने इस नियम पर हस्ताक्षर नहीं किये थे?"

राजा ने उत्तर दिया, "हाँ,' मैंने उस नियम पर हस्ताक्षार किये थे और मादियों और फारसियों के नियम अटल होते हैं। न तो वे बदले जा सकते हैं, और नहीं मिटाये, जा सकते हैं।"

13इस पर उन लोगों ने राजा से कहा, "दानिय्येल नाम का वह व्यक्ति आपकी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है। दानिय्येल यहूदा के बन्दियों में से एक हैं। जिस नियम पर आपने हस्ताक्षर किये हैं, दानिय्येल उस पर ध्यान नहीं दे रहा है। दानिय्येल अभी भी हर दिन तीन बार अपने परमेश्वर की प्रार्थना करता है।"

14राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत दुःखी और व्याकुल हो उठा। राजा ने दानिय्येल को बचाने की ठान ली। दानिय्येल को बचाने की कोई उपाय सोचते सोचते उसे शाम हो गयी। 15इसके बाद वे लोग एक झुण्ड बना कर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजा से कहा, "हे राजन, मादियों और फ़ारसियों की व्यवस्था के अनुसार जिस नियम अथवा आदेश पर राजा हस्ताक्षर कर दे, वह न तो कभी बदला जा सकता है और न ही कभी मिटाया जा सकता है।"

16सो राजा दारा ने आदेश दे दिया। वे लोग दानिय्येल को पकड़ लाये और उसे शेरों की मांद में फेंक दिया। राजा ने दानिय्येल से कहा, "मुझे आशा है कि तू जिस परमेश्वर की सदा उपासना करता है, वह तेरी रक्षा करेगा।" 17एक बड़ा सा पत्थर लाया गया और उसे शेरों की माँद के द्वार पर अड़ा दिया गया। फिर राजा ने अपनी अंगूठी ली और उस पत्थर पर अपनी मुहर लगा दी। साथ ही उसने अपने हाकिमों की अंगूठियों की मुहरें भी उस पत्थर पर लगा दीं। इसका यह अभिप्राय था कि उस पत्थर को कोई भी हटा नहीं सकता था और शेरों की उस माँद से दानिय्येल को बाहर नहीं ला सकता था। 18इसके बाद राजा दारा अपने महल को वापस चला गया। उस रात उसने खाना नहीं खाया। वह नहीं चाहता था कि कोई उसके पास आये और उसका मन बहलाये। राजा सारी रात सो नहीं पाया।

19अगली सुबह जैसे ही सूरज का प्रकाश फैलने लगा, राजा दारा जाग गया और शेरों की माँद की ओर दौड़ा। 20राजा बहुत चिंतित था। राजा जब शेरों की माँद के पास गया तो वहाँ उसने दानिय्येल को ज़ोर से आवाज़ लगाई। राजा ने कहा, "हे दानिय्येल, हे जीवित परमेश्वर के सेवक, क्या तेरा परमेश्वर तुझे शेरों से बचा पाने में समर्थ हो सका है? तू तो सदा ही अपने परमेश्वर की सेवा करता रहा है।"

21दानिय्येल ने उत्तर दिया, "राजा, अमर रहे! 22मेरे परमेश्वर ने मुझे बचाने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा था। उस स्वर्गदूत ने शेरों के मुँह बन्द कर दिये। शेरों ने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई क्योंकि मेरा परमेश्वर जानता है कि मैं निरपराध हूँ। मैंने राजा के प्रति कभी कोई बुरा नहीं किया है।"

23राजा दारा बहुत प्रसन्न था। राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे दानिय्येल को शेरों की माँद से बाहर खींच लें। जब दानिय्येल को शेरों की माँद से बाहर लाया गया तो उन्हें उस पर कहीं कोई घाव नहीं दिखाई दिया। शेरों ने दानिय्येल को कोई हानि नहीं पहुँचाई थी क्योंकि दानिय्येल को अपने परमेश्वर में विश्वास था।

24इसके बाद राजा ने उन लोगों को जिन्होंने दानिय्येल पर अभियोग लगा कर उसे शेरों की माँद में डलवाया था, बुलवाने का आदेश दिया और उन लोगों को, उनकी पत्नियों को और उनके बच्चों को शेरों की मांद में फेंकवा दिया गया। इससे पहले कि वे शेरों की मांद में धरती पर गिरते, शेरों ने उन्हें दबोच लिया। शेर उनके शरीरों को खा गये और फिर उनकी हड्डियों को भी चबा गये।

25इस पर राजा दारा ने सारी धरती के लोगों, दूसरी जाति के विभिन्न भाषा बोलनेवालों को यह पत्र लिखा:

शुभकामनाएँ।

26मैं एक नया नियम बना रहा हूँ। मेरे राज्य के हर भाग के लोगों के लिये यह नियम होगा। तुम सभी लोगों को दानिय्येल के परमेश्वर का भय मानना चाहिये और उसका आदर करना चाहिये।

दानिय्येल का परमेश्वर जीवित परमेश्वर है। परमेश्वर सदा–सदा अमर रहता है! साम्राज्य उसका कभी समाप्त नहीं होगा उसके शासन का अंत कभी नहीं होगा 27परमेश्वर लोगों को बचाता है और रक्षा करता है। स्वर्ग में और धरती के ऊपर परमेश्वर अद्‌भुत आश्चर्यपूर्ण कर्म करता है! परमेश्वर ने दानिय्येल को शेरों से बचा लिया।"

28इस तरह जब दारा का राज था और जिन दिनों
फारसी राजा कुस्रू की हुकूमत थी, दानिय्येल ने
सफलता प्राप्त की।

चार पशुओं के बारे में दानिय्येल का स्वप्न

7 बेलशस्सर के बाबुल पर शासन काल के पहले
वर्ष दानिय्येल को एक सपना आया सपने में
अपने पलंग पर लेटे हुए दानिय्येल ने, ये दर्शन देखे।
दानिय्येल ने जो सपना देखा था, उसे लिख लिया।
2दानिय्येल ने बताया, "रात में मैंने सपने में एक
दर्शन पाया। मैंने देखा कि चारों दिशाओं से हवा बह
रही हैं और उन हवाओं से सागर उफनने लगा था।
3फिर मैंने तीन पशुओं को देखा। हर पशु दूसरे पशु
से भिन्न था। वे चारों पशु समुद्र में से उभर कर बाहर
निकले थे।

4"उनमें से पहला पशु सिंह के समान दिखाई दे
रहा था और उस सिंह के उकाब के जैसे पंख थे।
मैंने उस पशु को देखा। फिर मैंने देखा कि उसके
पंख उखाड़ फेंके गये हैं। धरती पर से उस पशु को
इस प्रकार उठाया गया जिससे वह किसी मनुष्य के
समान अपने दो पैरों पर खड़ा हो गया। इस सिंह को
मनुष्य का सा दिमाग़ दे दिया गया था।

5"और फिर मैंने देखा कि मेरे सामने एक और
दूसरा पशु मौजूद है। यह पशु एक भालू के जैसा था। वह
अपनी एक बगल पर उठा हुआ था। उस पशु के मुँह मे
दांतों के बीच तीन पसलियाँ थीं। उस भालू से कहा गया
था, 'उठ और तुझे जितना चाहिये उतना माँस खा ले!'

6"इसके बाद, मैंने देखा कि मेरे सामने एक और
पशु खड़ा है। यह पशु चीते जैसे लग रहा था और उस
चीते की पीठ पर चार पंख थे। पंख ऐसे लग रहे थे,
जैसे वे किसी चिड़िया के पंख हों। इस पशु के चार
सिर थे, और उसे शासन का अधिकार दिया गया था।

7"इसके बाद, सपने में रात को मैंने देखा कि मेरे
सामने एक और चौथा जानवर खड़ा है। यह जानवर
बहुत खुँखार और भयानक लग रहा था। वह बहुत मज़बूत
दिखाई दे रहा था। उसके लोहे के लम्बे-लम्बे दाँत थे।
यह जानवर अपने शिकारों को कुचल कर के खा डाल
रहा था और शिकार को खा चुकने के बाद जो कुछ बच
रहता, वह उसे अपने पैरों तले कुचल रहा था। इस पशु
से पहले मैंने सपने में जो पशु देखे थे, यह चौथा पशु
उन सबसे अलग था। इस पशु के दस सींग थे।

8"अभी मैं उन सींगों के बारे में सोच ही रहा था कि
उन सींगों के बीच एक सींग और उग आया। यह सींग
बहुत छोटा था। इस छोटे सींग पर आँखे थी, और वे
आँखे किसी व्यक्ति की आँखों जैसी थीं। इस छोटे सींग में
एक मुख भी था और वह स्वयं की प्रशंसा कर रहा था।
इस छोटे सींग ने अन्य सींगों में से तीन सींग उखाड़ फेंके।

चौथे पशु का न्याय

9"मेरे देखते ही देखते, उनकी जगह पर सिंहासन रखे
गये और वह सनातन राजा सिंहासन पर विराज गया।
उसके वस्त्र अति धवल थे, वे वस्त्र बर्फ से श्वेत थे।
उनके सिर के बाल श्वेत थे, वे ऊन से भी श्वेत थे।
उसका सिंहासन अग्नि का बना था और उसके पहिए
लपटों से बने थे। 10सनातन राजा के सामने एक आग की
नदी बह रही थी। लाखों करोड़ों लोग उसकी सेवा में थे।
उसके सामने करोड़ों दास खड़े थे। यह दृश्य कुछ वैसा ही
था जैसे दरबार शुरु होने को पुस्तके खोली गयी हों।

11"मैं देखता का देखता रह गया क्योंकि वह छोटा
सींग डींगे मार रहा था। मैं उस समय तक देखता रहा
जब अंतिम रूप से चौथे पशु की हत्या कर दी गयी।
उसकी देह को नष्ट कर दिया गया और उसे धधकती
हुई आग में डाल दिया गया। 12दूसरे पशुओं की शक्ति
और राजसत्ता उनसे छीन लिये गये। किन्तु एक
निश्चित समय तक उन्हें जीवित रहने दिया गया।

13"रात को मैंने अपने दिव्य स्वप्न में देखा कि मेरे
सामने कोई खड़ा है, जो मनुष्य जैसा दिखाई देता था। वह
आकाश में बादलों पर आ रहा था। वह उस सनातन राजा
के पास आया था। सो उसे उसके सामने ले आया गया।

14"वह जो मनुष्य के समान दिखाई दे रहा था, उसे
अधिकार, महिमा और सम्पूर्ण शासन सत्ता सौंप दी गयी।
सभी लोग, सभी जातियाँ और प्रत्येक भाषा-भाषी लोग
उसकी आराधना करेंगे। उसका राज्य अमर रहेगा।
उसका राज्य सदा बना रहेगा। वह कभी नष्ट नहीं होगा।

चौथे पशु के स्वप्न का फल

15"मैं, दानिय्येल बहुत विकल और चिंतित था। वे
दर्शन जो मैंने देखे थे, उन्होंने मुझे विकल बनाया

हुआ था। 16मैं, जो वहाँ खड़े थे, उनमें से एक के पास पहुँचा। मैंने उससे पूछा, "इस सब कुछ का अर्थ क्या है? "सो उसने बताया, उसने मुझे समझाया कि इन बातों का मतलब क्या है। 17उसने कहा, 'वे चार बड़े पशु, चार राज्य हैं। वे चारों राज्य धरती से उभरेंगे। 18किन्तु परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य को प्राप्त करेंगे जो एक अमर राज्य होगा।'

19"फिर मैंने यह जानना चाहा कि वह चौथा पशु क्या था और उसका क्या अभिप्राय था? वह चौथा पशु सभी दूसरे पशुओं से भिन्न था। वह बहुत भयानक था। उसके दाँत लोहे के थे, और पंजे काँसे के थे। यह वह पशु था, जिसने अपने शिकार को चकनाचूर करके पूरी तरह खा लिया था, और अपने शिकार को खाने के बाद जो कुछ बचा था, उसे उसने अपने पैरों तले रौंद डाला था। 20उस चौथे पशु के सिर पर जो दस सींग थे, मैंने उनके बारे में जानना चाहा और मैंने उस सींग के बारे में भी जानना चाहा जो वहाँ उगा था। उस सींग ने उन दस सींगों में से तीन सींग उखाड़ फेंके थे। वह सींग अन्य सींगों से अधिक बड़ा दिखाई देता था। उसके आँखे थी और वह अपनी डींगे हाँके चला जा रहा था। 21मैं देख ही रहा था कि उस सींग ने परमेश्वर के पवित्र लोग के विरुद्ध युद्ध और उन पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया है और वह सींग उन्हें मारे डाल रहा है। 22परमेश्वर के पवित्र लोग को वह सींग उस समय तक मारता रहा जब तक सनातन राजा ने आकर उसका न्याय नहीं किया। सनातन राजा ने उस सींग के न्याय की घोषणा की। उस न्याय से परम परमेश्वर के भक्तों को सहारा मिला और उन्हें उनके अपने राज्य की प्राप्ति हो गयी।

23"और फिर उसने सपने को मुझे इस प्रकार समझाया कि वह चौथा पशु, वह चौथा राज्य है जो धरती पर आयेगा। वह राज्य अन्य सभी राज्यों से अलग होगा। वह चौथा राज्य संसार में सब कहीं लोगों का विनाश करेगा। संसार के सभी देशों को वह अपने पैरों तले रौंदेगा और उनके टुकड़े टुकड़े कर देगा। 24वे दस सींग वे दस राजा हैं, जो इस चौथे राज्य में आयेंगे। इन दसों राजाओं के चले जाने के बाद एक और राजा आयेगा। वह राजा अपने से पहले के राजाओं से अलग होगा। वह उन में से तीन दूसरे राजाओं को पराजित करेगा। 25यह विशेष राजा परम प्रधान परमेश्वर के विरुद्ध बातें करेगा तथा वह राजा परमेश्वर के पवित्र लोग को हानि पहुँचायेगा और उनका वध करेगा। जो पवित्र उत्सव और जो नियम इस समय प्रचलन में है, वह राजा उन्हें बदलने का जतन करेगा। परमेश्वर के पवित्र लोग साढ़े तीन साल तक उस राजा की शक्ति के अधीन रहेंगे।

26"'किन्तु जो कुछ होना है, उसका निर्णय न्यायालय करेगा और उस राजा से उसकी शक्ति छीन ली जायेगी। उसके राज्य का पूरी तरह अंत हो जायेगा। 27फिर परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य का शासन चलायेंगे। धरती के सभी राज्यों के सभी लोगों पर उनका शासन होगा। यह राज्य सदा सदा अटल रहेगा, और अन्य सभी राज्यों के लोग उन्हें आदर देंगे और उनकी सेवा करेंगे।'

28"इस प्रकार उस सपने का अंत हुआ। मैं, दानिय्येल तो बहुत डर गया था। डर से मेरा मुँह पीला पड़ गया था। मैंने जो बातें देखी थीं और सुनी थीं, मैंने उनके बारे में दूसरे लोगों को नहीं बताया।"

भेड़े और बकरे के बारे में दानिय्येल का दर्शन

8 बेलशस्सर के शासन काल के तीसरे साल मैंने यह दर्शन देखा। यह उस दर्शन के बाद का दर्शन है। 2मैंने देखा कि मैं शूशन नगर में हूँ। शूशन, एलाम प्रांत की राजधानी थी। मैं ऊलै नदी के किनारे पर खड़ा था। 3मैंने आँखें ऊपर उठाई तो देखा कि ऊलै नदी के किनारे पर एक मेढ़ा खड़ा है। उस मेढ़े के दो लम्बे लम्बे सींग थे। यद्यपि उसके दोनों ही सींग लम्बे थे। पर एक सींग दूसरे से बड़ा था। लम्बा वाला सींग छोटे वाले सींग के बाद में उगा था। 4मैंने देखा कि वह मेढ़ा इधर उधर सींग मारता फिरता है। मैंने देखा कि वह मेढ़ा कभी पश्चिम की ओर दौड़ता हैं तो कभी उत्तर की ओर, और कभी दक्षिण की ओर उस मेढ़े को कोई भी पशु रोक नहीं पा रहा है और न ही कोई दूसरे पशुओं को बचा पा रहा है। वह मेढ़ा वह सब कुछ कर सकता है, जो कुछ वह करना चाहता है। इस तरह से वह मेढ़ा बहुत शक्तिशाली हो गया।

5मैं उस मेढ़े के बारे में सोचने लगा। मैं अभी सोच ही रहा था कि पश्चिम की ओर से मैंने एक बकरे को आते देखा। यह बकरा सारी धरती पर दौड़ गया। किन्तु उस बकरे के पैर धरती से छुए तक नहीं। इस बकरे के एक

लम्बा सींग था। जो साफ–साफ दिख रहा था, वह सींग बकरे की दोनों आँखों के बीचों–बीच था।

6फिर वह बकरा उस दो सींग वाले मेढ़े के पास आया। यह वही मेढ़ा था जिसे मैंने ऊलै नदी के किनारे खड़ा देखा था। वह बकरा क्रोध से भरा हुआ था। सो वह मेढ़े की तरफ लपका। 7बकरे को उस मेढ़े की तरफ भागते हुए मैंने देखा। वह बकरा गुस्से में आग बबूला हो रहा था। सो उसने मेढ़े के दोनों सींग तोड़ डाले। मेढ़ा बकरे को रोक नहीं पाया। बकरे ने मेढ़े को धरती पर पछाड़ दिया और फिर उस बकरे ने उस मेढ़े को पैरों तले कुचल दिया। वहाँ उस मेढ़े को बकरे से बचाने वाला कोई नहीं था।

8सो वह बकरा बहुत शक्तिशाली बन बैठा। किन्तु जब वह शक्तिशाली बना, उसका बड़ा सींग टूट गया और फिर उस बड़े सींग की जगह चार सींग और निकल आये। वे चारों सींग आसानी से दिखाई पड़ते थे। वे चार सींग अलग–अलग चारों दिशाओं की ओर मुड़े हुए थे।

9फिर उन चार सींगों में से एक सींग में एक छोटा सींग और निकल आया। वह छोटा सींग बढ़ने लगा और बढ़ते–बढ़ते बहुत बड़ा हो गया। यह सींग दक्षिण–पूर्व की ओर बढ़ा। यह सींग सुन्दर धरती की ओर बढ़ा। 10वह छोटा सींग बढ़कर बहुत बड़ा हो गया। उसने बढ़ते बढ़ते आकाश छू लिया। उस छोटे सींग ने, यहाँ तक कि कुछ तारों को भी धरती पर पटक दिया और उन सभी तारों को पैरों तले मसल दिया। 11वह छोटा सींग बहुत मज़बूत हो गया और फिर वह तारों के शासक (परमेश्वर) के विरुद्ध हो गया। उस छोटे सींग ने उस शासक (परमेश्वर) को अर्पित की जाने वाली दैनिक बलियों को रोक दिया। वह स्थान जहाँ लोग उस शासक (परमेश्वर) की उपासना किया करते थे, उसने उसे उजाड़ दिया 12और उनकी सेना को भी हरा दिया और एक विद्रोही कार्य के रुप में वह छोटा सींग दैनिक बलियों के ऊपर अपने आपको स्थापित कर दिया। वह सत्य को धरती पर दे पटक दिया। वह छोटा सींग जो कुछ किया उस सब कुछ में सफल हो गया।

13फिर मैंने किसी पवित्र जन को बोलते सुना और उसके बाद मैंने सुना कि कोई दूसरा पवित्र जन उस पहले पवित्र जन को उत्तर दे रहा है। पहले पवित्र जन ने कहा, "यह दर्शन दर्शाता है कि दैनिक बलियों का क्या होगा? यह उस भयानक पाप के विषय में है जो विनाश कर डालता है। यह दर्शाता है कि जब लोग उस शासक के पूजास्थल को तोड़ डालेंगे तब क्या होगा? यह दर्शन दर्शाता है कि जब लोग उस समूचे स्थान को पैर तले रौंदेंगे तब क्या होगा। यह दर्शन दर्शाता है कि जब लोग तारों के ऊपर पैर धरेंगे तब क्या होगा? किन्तु ये बातें कब तक होती रहेंगी?"

14दूसरे पवित्र जन ने कहा, "दो हजार तीन सौ दिन तक ऐसा ही होता रहेगा और फिर उसके बाद पवित्र स्थान को फिर से स्थापित कर दिया जायेगा।"

दर्शन की व्याख्या

15मैं, दानिय्येल ने यह दर्शन देखा था, और यह प्रयत्न किया कि उसका अर्थ समझ लूँ। अभी मैं इस दर्शन के विषय में सोच ही रहा था कि मनुष्य के जैसा दिखने वाला कोई अचानक आ कर मेरे सामने खड़ा हो गया। 16इसके बाद मैंने किसी पुरुष की वाणी सुनी। यह वाणी ऊलै नदी के ऊपर से आ रही थी। उस आवाज़ ने कहा, "जिब्राएल, इस व्यक्ति को इसके दर्शन का अर्थ समझा दो।"

17सो जिब्राएल जो किसी मनुष्य के समान दिख रहा था, जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ आ गया। वह जब मेरे पास आया तो मैं बहुत डर गया। मैं धरती पर गिर पड़ा। किन्तु जिब्राएल ने मुझसे कहा, "अरे मनुष्य, समझ ले कि यह दर्शन अंत समय के लिये है।"

18अभी जिब्राएल बोल ही रहा था कि मुझे नींद आ गयी। नींद बहुत गहरी थी। मेरा मुख धरती की ओर था। फिर जिब्राएल ने मुझे छुआ और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया। 19जिब्राएल ने कहा, "देख, मैं तुझे अब, उस दर्शन को समझाता हूँ। मैं तुझे बताऊँगा कि परमेश्वर के क्रोध के समय के बाद में क्या कुछ घटेगा।

20"तूने दो सींगों वाला मेढ़ा देखा था। वे दो सींग है मादी और फारस के दो देश। 21वह बकरा यूनान का राजा है। उसकी दोनों आँखों के बीच का बड़ा सींग वह पहला राजा है। 22वह सींग टूट गया और उसके स्थान पर चार सींग निकल आये। वे चार सींग चार राज्य हैं। वे चार राज्य, उस पहले राजा के राष्ट्र से प्रकट होंगे किन्तु वे चारों राज्य उस पहले राजा के से मज़बूत नहीं होंगे।

23"जब उन राज्यों का अंत निकट होगा, तब वहाँ
एक बहुत साहसी और क्रूर राजा होगा। यह राजा बहुत
मक्कार होगा। ऐसा उस समय घटेगा जब पापियों की
संख्या बढ़ जायेगी। 24यह राजा बहुत शक्तिशाली होगा
किन्तु उसकी शक्ति उसकी अपनी नहीं होगी। यह राजा
भयानक तबाही मचा देगा। वह जो कुछ करेगा उसमें
उसे सफलता मिलेगी। वह शक्तिशाली लोगों–यहाँ तक
कि परमेश्वर के पवित्र लोग को भी नष्ट कर देगा।
25"यह राजा बहुत चुस्त और मक्कार होगा। वह
अपनी कपट और झूठों के बल पर सफलता पायेगा।
वह अपने आप को सबसे बड़ा समझेगा। लोगों को
वह बिना किसी पूर्व चेतावनी के नष्ट करवा देगा।
यहाँ तक कि वह राजाओं के राजा (परमेश्वर) से
भी युद्ध का जतन करेगा किन्तु उस क्रूर राजा की
शक्ति का अंत कर दिया जायेगा और उसका अंत
किसी मनुष्य के हाथों नहीं होगा।
26"उन भक्तों के बारे में यह दर्शन और वे बातें जो
मैंने कही हैं, सत्य हैं। किन्तु इस दर्शन पर तू मुहर
लगा कर रख दे। क्योंकि वे बातें अभी बहुत सारे
समय तक घटने वाली नहीं हैं।'"
27उस दिव्य दर्शन के बाद में मैं दानिय्येल, बहुत
कमज़ोर हो गया और बहुत दिनों तक बीमार पड़ा
रहा। फिर बीमारी से उठकर मैंने लौट कर राजा का
कामकाज करना आरम्भ कर दिया किन्तु उस दिव्य
दर्शन के कारण मैं बहुत व्याकुल रहा करता था। मैं
उस दर्शन का अर्थ समझ ही नहीं पाया था।

दानिय्येल की विनती

9 राजा दारा के शासन के पहले वर्ष के दौरान ये
बातें घटी थीं। दारा क्षयर्ष नाम के व्यक्ति का
पुत्र था। दारा मादी लोगों से सम्बन्धित था। वह बाबुल
का राजा बना। 2दारा के राजा के पहले वर्ष में मैं,
दानिय्येल कुछ किताबें पढ़ रहा था। उन पुस्तकों में
मैंने देखा कि यहोवा ने यिर्मयाह को यह बताया है कि
यरूशलेम का पुन:निर्माण कितने बरस बाद होगा।
यहोवा ने कहा था कि इससे पहले कि यरूशलेम
फिर से बसे, सत्तर वर्ष बीत जायेंगे।
3फिर मैं अपने स्वामी परमेश्वर की ओर मुड़ा और
उससे प्रार्थना करते हुए सहायता की याचना की। मैंने
भोजन करना छोड़ दिया और ऐसे कपड़े पहन लिये
जिनसे यह लगे कि मैं दु:खी हूँ। मैंने अपने सिर पर
धूल डाल ली। 4मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
करते हुए उसको अपने सभी पाप बता दिये। मैंने
कहा, "हे यहोवा, तू महान और भययोग्य परमेश्वर
है। जो व्यक्ति तुझसे प्रेम करते हैं, तू उनके साथ
अपने प्रेम और दयालुता के वाचा को निभाता है। जो
लोग तेरे आदेशों का पालन करते हैं उनके साथ तू
अपना वाचा निभाता है।
5"किन्तु हे यहोवा, हम पापी हैं! हमने बुरा किया
है। हमने कुकर्म किये हैं। हमने तेरा विरोध किया है।
तेरे निष्पक्ष न्याय और तेरे आदेशों से हम दूर भटक
गये हैं। 6हम नबियों की बात नहीं सुनते। नबी तो तेरे
सेवक हैं। नबियों ने तेरे बारे में बताया। उन्होंने हमारे
राजाओं, हमारे मुखियाओं और हमारे पूर्वजों को बताया
था। उन्होंने इस्राएल के सभी लोगों को भी बताया था।
किन्तु हमने उन नबियों की नहीं सुनी!
7"हे यहोवा, तू खरा है, और तुझमें नेकी है! जबकि
हम आज लज्जित हैं। यरूशलेम और यहूदा के लोग
लज्जित हैं–इस्राएल के सभी लोग लज्जित हैं। वे लोग
जो निकट हैं और वे लोग जो बहुत दूर हैं। हे यहोवा!
तूने उन लोगों को बहुत से देशों में फैला दिया। उन
सभी देशों में बसे इस्राएल के लोगों को शर्म आनी
चाहिये। हे यहोवा, उन सभी बुरी बातों के लिये, जो
उन्होंने तेरे विरुद्ध की हैं, उन्हें लज्जित होना चाहिये।
8"हे यहोवा, हम सब को लज्जित होना चाहिये। हमारे
सभी राजाओं और मुखियाओं को लज्जित होना चाहिये,
हमारे सभी पूर्वजों को लज्जित होना चाहिये। ऐसा क्यों?
ऐसा इसलिये कि हे यहोवा, हमने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं।
9"किन्तु हे यहोवा, तू दयालु है। लोग, जो बुरे कर्म करते
तो तू उन्हें, क्षमा कर देता है। हमने वास्तव में तुझसे मुँह
फेर लिया था। 10हमने अपने यहोवा परमेश्वर की आज्ञा
का पालन नहीं किया। यहोवा ने अपने सेवकों, अपने
नबियों के द्वारा हमें व्यवस्था का विधान प्रदान किया। किन्तु
हमने उसकी व्यवस्थाओं को नहीं माना। 11इस्राएल का
कोई भी व्यक्ति तेरी शिक्षाओं पर नहीं चला। वे सभी भटक
गये थे। उन्होंने तेरे आदेशों का पालन नहीं किया। मूसा,
(जो परमेश्वर का सेवक था) की व्यवस्था के विधान में
शापों और वादों का उल्लेख हुआ है। वे शाप और वादे

व्यवस्था के विधान पर नहीं चलने के दण्ड का बखान करते हैं और वे सभी बातें हमारे संग घट चुकी हैं क्योंकि हमने यहोवा के विरोध में पाप किये हैं।

12"परमेश्वर ने बताया था कि हमारे साथ और हमारे मुखियाओं के साथ वे बातें घटेंगी और उसने उन्हें घटा दिया। उसने हमारे साथ भयानक बातें घटा दीं। यरूशलेम को जितना कष्ट उठाना पड़ा, किसी दूसरे नगर ने नहीं उठाया। 13वे सभी भयानक बातें हमारे साथ भी घटीं। ये बातें ठीक वैसे हीं घटी, जैसे मूसा के व्यवस्था के विधान में लिखी हुई हैं। किन्तु हमने अभी भी परमेश्वर से सहारा नहीं माँगा है। हमने अभी भी पाप करना नहीं छोड़ा है। हे यहोवा, तेरे सत्य पर हम अभी भी ध्यान नहीं देते। 14यहोवा ने वे भयानक बातें तैयार रख छोड़ी थीं और उसने हमारे साथ उन बातों को घटा दिया। हमारे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा इसलिए किया था कि वह तो जो कुछ भी करता है, न्याय ही करता है। किन्तु हम अभी भी उसकी नहीं सुनते।

15"हे हमारे परमेश्वर, यहोवा, तूने अपनी शक्ति का प्रयोग किया और हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया। हम तो तेरे अपने लोग हैं। आज तक उस घटना के कारण तू जाना माना जाता है। हे यहोवा, हमने पाप किये हैं। हमने भयानक काम किये हैं। 16हे यहोवा, यरूशलेम पर क्रोध करना छोड़ दे। यरूशलेम तेरे पवित्र पर्वतों पर स्थित है। तू जो करता है, ठीक ही करता है। सो यरूशलेम पर क्रोधित होना छोड़ दे। हमारे आसपास के लोग हमारा अपमान करते हैं और हमारे लोगों की हँसी उड़ाते हैं। हमारे पूर्वजों ने तेरे विरुद्ध पाप किया था। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है।

17"अब, हे यहोवा, तू मेरी प्रार्थना सुन ले। मैं तेरा दास हूँ। सहायता के लिए मेरी विनती सुन। अपने पवित्र स्थान के लिए तू अच्छी बातें कर। वह भवन नष्ट कर दिया गया था। किन्तु हे स्वामी, तू स्वयं अपने भले के लिए इन भली बातों को कर। 18हे मेरे परमेश्वर, मेरी सुन! जरा अपनी आँखें खोल और हमारे साथ जो भयानक बातें घटी हैं, उन्हें देख! वह नगर जो तेरे नाम से पुकारा जाता था, देख उसके साथ क्या हो गया है! मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हम अच्छे लोग हैं। इसलिये मैं इन बातों की याचना कर रहा हूँ। यह याचना तो मैं इसलिये कर रहा हूँ कि मैं जानता हूँ कि तू दयालु है। 19हे यहोवा मेरी सुन, हे यहोवा, हमें क्षमा कर! हे यहोवा, हम पर ध्यान दे, और फिर कुछ कर! अब और प्रतीक्षा मत कर! इसी समय कुछ कर! उसे तू स्वयं अपने भले के लिये कर! हे परमेश्वर, अब तो अपने नगर और अपने उन लोगों के लिये, जो तेरे नाम से पुकारे जाते हैं, कुछ कर।"

सत्तर सप्ताहों के बारे में दर्शन

20मैं परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए ये बातें कह रहा था। मैं इस्राएल के लोगों के और अपने पापों के बारे में बता रहा था। मैं परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर प्रार्थना कर रहा था। 21मैं अभी प्रार्थना कर ही रहा था कि जिब्राएल मेरे पास आया। जिब्राएल वही स्वर्गदूत था जिसे मैंने दर्शन में देखा था। जिब्राएल शीघ्रता से मेरे पास आया। वह सांझ की बलि के समय आया था। 22मैं जिन बातों को समझना चाहता था, उन बातों को समझने में जिब्राएल ने मेरी सहायता की। जिब्राएल ने कहा, "हे दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि प्रदान करने और समझने में तेरी सहायता को आया हूँ। 23जब तूने पहले प्रार्थना आरम्भ की थी, मुझे तभी आदेश दे दिया गया था और देख मैं तुझे बताने आ गया हूँ। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है! यह आदेश तेरी समझ में आ जायेगा और तू उस दर्शन का अर्थ जान लेगा।

24"हे दानिय्येल, परमेश्वर ने तेरी प्रजा और तेरी नगरी के लिये सत्तर सप्ताहो का समय निश्चित किया है। सत्तर सप्ताहो के समय का यह आदेश इसलिए दिया गया है कि बुरे कर्म करना छोड़ दिया जाये, पाप करना बन्द कर दिया जाये, सब लोगों को शुद्ध किया जाये, सदा–सदा बनी रहने वाली नेकी को लाया जाये, दर्शन और नबियों पर मुहर लगा दी जाये, और एक अत्यंत पवित्र स्थान को समर्पित किया जाये।

25"दानिय्येल, तू इन बातों को समझ ले। इन बातों को जान ले! वापस आने और यरूशलेम के पुनर्निर्माण की आज्ञा को समय से लेकर अभिषिक्त के आने के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। इसके बाद यरूशलेम फिर से बसाया जायेगा। यरूशलेम में लोगों के परस्पर मिलने के स्थान फिर से बन जायेंगे। नगर की रक्षा करने के लिये नगर के चारों ओर खाई भी होगी। बासठ सप्ताह तक यरूशलेम को बसाया जायेगा। किन्तु उस समय बहुत सी विपत्तियाँ आयेंगी। 26बासठ सप्ताह बाद उस अभिषिक्त पुरुष की हत्या कर दी जायेगी। वह चला जायेगा। फिर

होने वाले नेता के लोग नगर को और उस पवित्र ठांव को तहस-नहस कर देंगे। वह अंत ऐसे आयेगा जैसे बाढ़ आती है। अंत तक युद्ध होता रहेगा। उस स्थान को पूरी तरह तहस-नहस कर देने की परमेश्वर आज्ञा दे चुका है।

27"इसके बाद वह भावी शासक बहुत से लोगों के साथ एक वाचा करेगा। वह वाचा एक सप्ताह तक चलेगा। भेंटे और बलियाँ आधे सप्ताह तक रुकी रहेंगी और फिर एक विनाश कर्ता आयेगा। वह भयानक विध्वंसक बातें करेगा। किन्तु परमेश्वर उस विनाश कर्ता के सम्पूर्ण विनाश की आज्ञा दे चुका है।"

हिद्दे केल नदी के किनारे दानिय्येल का दर्शन

10 कुस्रू फ़ारस का राजा था। कुस्रू के शासन काल के तीसरे वर्ष दानिय्येल को इन बातों का पता चला। (दानिय्येल का ही दूसरा नाम बेलतशस्सर था) ये संकेत सच थे और ये एक बड़े युद्ध के बारे में थे। दानिय्येल उन्हें समझ गया। वे बातें एक दर्शन में उसे समझाई गई थीं।

2दानिय्येल का कहना है, "उस समय, मैं, दानिय्येल, तीन सप्ताहों तक बहुत दुःखी रहा। 3उन तीन सप्ताहों के दौरान, मैंने कोई भी चटपटा खाना नहीं खाया। मैंने किसी भी प्रकार का माँस नहीं खाया। मैंने दाखमधु नहीं पी। किसी भी तरह का तेल मैंने अपने सिर में नहीं डाला। तीन सप्ताह तक मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

4"वर्ष के पहले महीने के अठाईसवें दिन मैं हिद्दे केल महानदी के किनारे खड़ा था। 5वहाँ खड़े-खड़े जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो वहाँ मैंने एक पुरुष को अपने सामने खड़े पाया। उसने सन के कपड़े पहने हुए थे। उसकी कमर में शुद्ध सोने की बनी हुई कमर बांध थी। 6उसका शरीर चमचमाते पत्थर के जैसी थी। उसका मुख बिजली के समान उज्ज्वल था! उसकी बाहें और उसके पैर चमकदार पीतल से झिलमिला रहे थे! उसकी आवाज़ इतनी ऊँची थी जैसे लोगों की भीड़ की आवाज़ होती है!

7"यह दर्शन बस मुझे, दानिय्येल को ही हुआ। जो लोग मेरे साथ थे, वे यद्यपि उस दर्शन को नहीं देख पाये किन्तु वे फिर भी डर गये थे। वे इतना डर गये कि भाग कर कहीं जा छिपे। 8सो मैं अकेला छूट गया। मैं उस दर्शन को देख रहा था और वह दृश्य मुझे भयभीत कर डाला था। मेरी शक्ति जाती रही। मेरा मुख ऐसे पीला पड़ गया जैसे मानो वह किसी मरे हुए व्यक्ति का मुख हो। मैं बेबस था। 9फिर दर्शन के उस व्यक्ति को मैंने बात करते सुना। मैं उसकी आवाज़ को सुन ही रहा था कि मुझे गहरी नींद ने घेर लिया। मैं धरती पर औंधे मुँह पड़ा था।

10"फिर एक हाथ ने मुझे छू लिया। ऐसा होने पर मैं अपने हाथों और अपने घुटनों के बल खड़ा हो गया। मैं डर के मारे थर थर काँप रहा था। 11दर्शन के उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'दानिय्येल, तू परमेश्वर का बहुत प्यारा है। जो शब्द मैं तुझसे कहूँ उस पर तू सावधानी के साथ विचार कर। खड़ा हो। मुझे तेरे पास भेजा गया है। जब उसने ऐसा कहा तो मैं खड़ा हो गया। मैं अभी भी थर-थर काँप रहा था क्योंकि मैं डरा हुआ था। 12इसके बाद दर्शन के उस पुरुष ने फिर बोलना आरम्भ किया। उसने कहा, 'दानिय्येल, डर मत। पहले ही दिन से तूने यह निश्चय कर लिया था कि तू परमेश्वर के सामने विवेकपूर्ण और विनम्र रहेगा। परमेश्वर तेरी प्रार्थनाओं को सुनता रहा है। तू प्रार्थना करता रहा है, मैं इसलिए तेरे पास आया हूँ। 13किन्तु फारस का युवराज (स्वर्गदूत) इक्कीस दिन तक मेरे साथ लड़ता रहा और मुझे तंग करता रहा। इसके बाद मिकाएल जो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण युवराज (स्वर्गदूत) था। मेरी सहायता के लिए मेरे पास आया क्योंकि मैं वहाँ फारस के राजा के साथ उलझा हुआ था।'

14"हे दानिय्येल, अब मैं तेरे पास तुझे वह बताने को आया हूँ जो भविष्य में तेरे लोगों के साथ घटने वाला है। कह स्वप्न एक आने वाले समय के बारे में है।'

15"अभी वह व्यक्ति मुझसे बात ही कर रहा था कि मैंने धरती की तरफ़ नीचे अपना मुँह झुका लिया। मैं बोल नहीं पा रहा था। 16फिर किसी ने जो मनुष्य के जैसा दिखाई दे रहा था, मेरे होंठों को छुआ। मैंने अपना मुँह खोला और बोलना आरम्भ किया। मेरे सामने जो खड़ा था, उससे मैंने कहा, महोदय, मैंने दर्शन में जो देखा था, मैं उससे व्याकुल और भयभीत हूँ। मैं अपने को असहाय समझ रहा हूँ। 17मैं तेरा दास दानिय्येल हूँ। मैं तुझसे कैसे बात कर सकता हूँ? मेरी शक्ति जाती रही है। मुझसे तो सांस भी नहीं लिया जा रहा है।"

18"मनुष्य जैसे दिखते हुए उसने मुझे फिर छुआ। उसके छूते ही मुझे अच्छा लगा। 19फिर वह बोला, 'दानिय्येल,

डर मत। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है। तुझे शांति प्राप्त हो। अब तू सुदृढ़ हो जा! सुदृढ़ हो जा!'

"उसने मुझसे जब बात की तो मैं और अधिक बलशाली हो गया। फिर मैंने उससे कहा, 'प्रभु! आपने तो मुझे शक्ति दे दी है। अब आप बोल सकते हैं।'

20"सो उसने फिर कहा, 'दानिय्येल, क्या तू जानता है, मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? फारस के युवराज (स्वर्गदूत) से युद्ध करने के लिये मुझे फिर वापस जाना है। मेरे चले जाने के बाद यूनान का युवराज (स्वर्गदूत) यहाँ आयेगा। 21किन्तु दानिय्येल अपने जाने से पहले तुम को सबसे पहले मुझे यह बताना है कि सत्य की पुस्तक में क्या लिखा है। उन बुरे राजकुमारों (स्वर्गदूतों) के विरोध में मीकाएल स्वर्गदूत के अलावा मेरे साथ कोई नहीं खड़ा होता। मीकाएल वह राजकुमार है (स्वर्गदूत) जो तेरे लोगों पर शासन करता है।"

11 मादी राजा दारा के शासन काल के पहले वर्ष मीकाएल को फारस के युवराज (स्वर्गदूत) के विरुद्ध युद्ध में सहारा देने और उसे सशक्त बनाने को मैं उठ खड़ा हुआ।

2"'अब देख, दानिय्येल मैं, तुझे सच्ची बात बताता हूँ। फारस में तीन राजाओं का शासन और होगा। यह इसके बाद एक चौथा राजा आयेगा। यह चौथा राजा अपने पहले के फारस के अन्य राजाओं से कहीं अधिक धनवान होगा। वह चौथा राजा शक्ति पाने के लिये अपने धन का प्रयोग करेगा। वह हर किसी को यूनान के विरोध में कर देगा। 3इसके बाद एक बहुत अधिक शक्तिशाली राजा आयेगा, वह बड़ी शक्ति के साथ शासन करेगा। वह जो चाहेगा वही करेगा। 4राजा के आने के बाद उसके राज्य के टुकड़े हे जायेंगे। उसका राज्य संसार में चार भागों में बंट जायेगा। उसका राज्य उसके पुत्र पोतों के बीच नहीं बटेगा। जो शक्ति उसमें थी, वह उसके राज्य में नहीं रहेगी। ऐसा क्यों होगा? ऐसा इसलिए होगा कि उसका राज्य उखाड़ दिया जायेगा और उसे अन्य लोगों को दे दिया जायेगा।

5"'दक्षिण का राजा शक्तिशाली हो जायेगा। किन्तु इसके बाद उसका एक सेनापति उस से भी अधिक शक्तिशाली हो जाएगा। वह सेना नायक शासन करने लगेगा और बहुत बलशाली हो जायेगा।

6"'फिर कुछ वर्षों बाद एक समझौता होगा और दक्षिणी राजा की पुत्री उत्तरी राजा से ब्याही जायेगी। वह शांति स्थापना के लिए ऐसा करेगी। किन्तु वह और दक्षिणी राजा पर्याप्त शक्तिशाली नहीं होंगे। फिर लोग उसके और उस व्यक्ति के जो उसे उस देश में लाया था, विरुद्ध हो जायेंगे और वे लोग उसके बच्चे के और उस स्त्री के हिमायती व्यक्ति के भी विरुद्ध हो जायेंगे।

7"'किन्तु उस स्त्री के परिवार का एक व्यक्ति दक्षिणी राजा के स्थान को ले लेने के लिए आयेगा। वह उत्तर के राजा की सेनाओं पर आक्रमण करेगा। वह राजा के सुदृढ़ किले में प्रवेश करेगा। वह युद्ध करेगा और विजयी होगा। 8वह उनके देवताओं की मूर्तियों को ले लेगा। वह उनके धातु के बने मूर्तियों तथा उनकी चाँदी–सोने की बहुमूल्य वस्तुओं पर कब्जा कर लेगा। वह उन वस्तुओं को वहाँ से मिस्र ले जायेगा। फिर कुछ वर्षो तक वह उत्तर के राजा को तंग नहीं करेगा। 9उत्तर का राजा दक्षिण के राज्य पर हमला करेगा। किन्तु पराजित होगा और फिर अपने देश को लौट जायेगा।

10"'उत्तर के राजा के पुत्रों ने युद्ध की तैयारियाँ करेंगे। वे एक विशाल सेना जुटायेंगे। वह सेना एक शक्तिशाली बाढ़ की तरह बड़ी तेज़ी से धरती पर आगे बढ़ती चली जायेगी। वह सेना दक्षिण के राजा के सुदृढ़ दुर्ग तक सारे रास्ते युद्ध करती जायेगी। 11फिर दक्षिण का राजा क्रोध से तिलमिला उठेगा। उत्तर के राजा से युद्ध करने के लिये वह बाहर निकल आयेगा। उत्तर का राजा यद्यपि एक बहुत बड़ी सेना जुटायेगा किन्तु युद्ध में हार जायेगा। 12"उत्तर की सेना पराजित हो जायेगी, और उन सैनिकों को कहीं ले जाया जायेगा। दक्षिणी राजा को बहुत अभिमान हो जायेगा और वह उत्तरी सेना के हजारों सैनिकों को मौत के घाट उतार देगा। किन्तु वह इसी प्रकार से सफलता नहीं प्राप्त करता रहेगा। 13उत्तर का राजा एक और सेना जुटायेगा। यह सेना पहली सेना से अधिक बड़ी होगी। कई वर्षो बाद वह आक्रमण करेगा। वह सेना बहुत विशाल होगी और उसके पास बहुत से हथियार होंगे। वह सेना युद्ध को तैयार होगी।

14"'उन दिनों बहुत से लोग दक्षिण के राजा के विरोध में हो जायेंगे। कुछ तुम्हारे अपने ही ऐसे लोग, जिन्हें युद्ध प्रिय है, दक्षिण के राजा के विरुद्ध बगावत करेंगे। वे जीतेंगे तो नहीं किन्तु ऐसा करते हुए वे उस दर्शन को

सत्य सिद्ध करेंगे। 15फिर इसके बाद उत्तर का राजा आयेगा और वह नगर परकोटे पर ढलवाँ चबूतरे बना कर उस सुदृढ़ नगर पर कब्जा कर लेगा। दक्षिण के राजा की सेना युद्ध का उत्तर नहीं दे पायेगी। यहाँ तक कि दक्षिणी सेना के सर्वोत्तम सैनिक भी इतने शक्तिशाली नहीं होंगे कि वे उत्तर की सेना को रोक पायें।

16"'उत्तर का राजा जैसा चाहेगा, वैसा करेगा। उसे कोई भी रोक नहीं पायेगा। इस सुन्दर धरती पर वह नियन्त्रण करके शक्ति पा लेगा। उसे इस प्रदेश को नष्ट करने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी। 17फिर उत्तर का राजा दक्षिण के राजा से युद्ध करने के लिये अपनी सारी शक्ति का उपयोग करने का निश्चय करेगा। वह दक्षिण के राजा के साथ एक सन्धि करेगा। उत्तर का राजा दक्षिण के राजा से अपनी एक पुत्री का विवाह कर देगा। उत्तर का राजा ऐसा इसलिए करेगा कि वह दक्षिण के राजा को हरा सके। किन्तु उसकी वे योजनाएँ फलीभूत नहीं होंगी। इन योजनाओं से उसे कोई सहायता नहीं मिलेगी।

18"'इसके बाद उत्तर का राजा भूमध्य–सागर के तट से लगते हुए देशों पर अपना ध्यान लगायेगा। वह उन देशों में से बहुत से देशों को जीत लेगा। किन्तु फिर एक सेनापति उत्तर के राजा के उस अहंकार और उस बगावत का अंत कर देगा। वह सेनापति उस उत्तर के राजा को लज्जित करेगा।

19"'ऐसा घटने के बाद उत्तर का वह राजा स्वयं अपने देश के सुदृढ़ किलों की ओर लौट जायेगा। किन्तु वह दुर्बल हो चुका होगा और उसका पतन हो जायेगा। फिर उसका पता भी नहीं चलेगा।

20"'उत्तर के उस राजा के बाद एक नया शासक आयेगा। वह शासक किसी कर वसूलने वाले को भेजेगा। वह शासक ऐसा इसलिए करेगा कि वह सम्पन्नता के साथ जीवन बिताने के लिए पर्याप्त धन जुटा सके। किन्तु थोड़े ही वर्षो में उस शासक का अंत हो जायेगा। किन्तु वह युद्ध में नहीं मारा जायेगा।

21"'उस शासक के बाद एक बहुत क्रूर एवं घृणा योग्य व्यक्ति आयेगा। उस व्यक्ति को राज परिवार का वंशज होने का गौरव प्राप्त नहीं होगा। वह चालाकी से राजा बनेगा। जब लोग अपने को सुरक्षित समझे हुए होंगे, वह तभी राज्य पर आक्रमण करेगा और उस पर कब्जा कर लेगा। 22वह विशाल शक्तिशाली सेनाओं को हरा देगा। वह समझौते के मुखिया के साथ सन्धि करने पर भी उसे पराजित करेगा। 23बहुत से राष्ट्र उस क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के साथ सन्धि करेंगे किन्तु वह उनसे मिथ्यापूर्ण चालाकी बरतेगा। वह अत्यधिक शक्ति प्राप्त कर लेगा किन्तु बहुत थोड़े से लोग ही उसके समर्थक होंगे।

24"'जब उस प्रदेश के सर्वाधिक धनी क्षेत्र अपने को सुरक्षित अनुभव कर रहे होंगे, वह क्रूर एवं घृणापूर्ण शासक उन पर आक्रमण कर देगा। वह ठीक समय पर आक्रमण करेगा और वहाँ सफलता प्राप्त करेगा जहाँ उसके पूर्वजों को भी सफलता नहीं मिली थी। वह जिन देशों को पराजित करेगा उनकी सम्पत्ति छीन कर अपने पिछलगुओं को देगा। वह सुदृढ़ नगरों को पराजित करने की योजनाएँ रचेगा। वह सफलता तो पायेगा किन्तु बहुत थोड़े से समय के लिए।

25"'उस क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के पास एक विशाल सेना होगी। वह उस सेना का उपयोग अपनी शक्ति और अपने साहस के प्रदर्शन के लिये करेगा और इससे वह दक्षिण के राजा पर आक्रमण करेगा। सो दक्षिण का राजा भी एक बहुत बड़ी और शक्तिशाली सेना जुटायेगा और युद्ध के लिए कूच करेगा किन्तु वे लोग जो उससे विरोध रखते हैं, छिपे–छिपे योजनाएँ रचेंगे और दक्षिणी राजा को पराजित कर दिया जायेगा। 26वे ही लोग जो दक्षिणी राजा के अच्छे मित्र समझे जाते रहे। उसे पराजित करने का जतन करेंगे। उसकी सेना पराजित कर दी जायेगी। युद्ध में उसके बहुत से सैनिक मारे जायेंगे। 27उन दोनों राजाओं का मन इसी बात में लगेगा कि एक दूसरे को हानि पहुँचायी जाये। वे एक ही मेज़ पर बैठ कर एक दूसरे से झूठ बोलेंगे किन्तु इससे उन दोनों में से किसी का भी भला नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर ने उनका अंत आने का समय निर्धारित कर दिया है।

28"'बहुत सी धन दौलत के साथ, वह उत्तर का राजा अपने देश लौट जायेगा। फिर उस पवित्र वाचा के प्रति वह बुरे कर्म करने का निर्णय लेगा। वह अपनी योजनानुसार काम करेगा और फिर अपने देश लौट जायेगा।

29"'फिर उत्तर का राजा ठीक समय पर दक्षिण के राजा पर हमला कर देगा किन्तु इस बार वह पहले की तरह कामयाब नहीं होगा। 30पश्चिम से जहाज़ आयेंगे और उत्तर के राजा के विरुद्ध युद्ध करेंगे। वह उन जहाज़ों को आते देखकर डर जायेगा। फिर वापस

लौट कर पवित्र वाचा पर वह अपना क्रोध उतारेगा। वह लौट कर, जिन लोगों ने पवित्र वाचा पर चलना छोड़ दिया था, उनकी सहायता करेगा। 31फिर उत्तर का वह राजा यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध करने के लिये अपनी सेना भेजेगा। वे लोगों को दैनिक बलि समर्पित करने से रोकेंगे। इसके बाद वे वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित करेंगे जो सचमुच विनाशक होगा। वे ऐसा भयानक काम शुरु करेंगे जो विनाश को जन्म देता है।

32"'वह उत्तरी राजा झूठी और चिकनी चुपड़ी बातों से उन यहूदियों को छलेगा जो पवित्र वाचा का पालन करना छोड़ चुके हैं। वे यहूदी और बुरे पाप करने लगेंगे किन्तु वे यहूदी, जो परमेश्वर को जानते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, और अधिक सुदृढ़ हो जायेंगे। वे पलट कर युद्ध करेंगे!

33"'वे यहूदी जो विवेकपूर्ण है जो कुछ घट रहा होगा, दूसरे यहूदियों को उसे समझने में सहायता देंगे। किन्तु जो विवेकपूर्ण होंगे, उन्हें तो मृत्यु दण्ड तक झेलना होगा। कुछ समय तक उनमें से कुछ यहूदियों को तलवार के घाट उतारा जायेगा और कुछ को आग में फेंक दिया जायेगा। अथवा बन्दी गृहों में डाल दिया जायेगा। उनमें से कुछ यहूदियों के घर बार और धन दौलत छीन लिये जायेंगे। 34जब वे यहूदी दण्ड भोग रहे होगें तो उन्हें थोड़ी सी सहायता मिलेगी। किन्तु उन यहूदियों में, जो उन विवेकपूर्ण यहूदियों का साथ देंगे, बहुत से केवल दिखावे के होंगे। 35कुछ विवेकपूर्ण यहूदी मार दिए जाएंगे। ऐसा इसलिए होगा कि वे और अधिक सुदृढ़ बनें, स्वच्छ बनें और अंत समय के आने तक निर्दोष रहें। फिर ठीक समय पर अंत होने का समय आ जायेगा।'"

आत्म प्रशंसक राजा

36"'उत्तर का राजा जो चाहेगा, सो करेगा। वह अपने बारे में डींग हांकेगा। वह आत्म प्रशंसा करेगा और सोचेगा कि वह किसी देवता से भी अच्छा है। वह ऐसी बातें करेगा जो किसी ने कभी सुनी तक न होंगी। वह देवताओं का परमेश्वर के विरोध में ऐसी बातें करेगा। वह उस समय तक कामयाब होता चला जायेगा जब तक वे सभी बुरी बातें घट नहीं जाती। किन्तु परमेश्वर ने योजना रची है, वह तो पूरी होगी ही।

37"'उत्तर का वह राजा उन देवताओं की उपेक्षा करेगा जिन्हें उसके पूर्वज पूजा करते थे। उन देवताओं की मूर्तियों की वह परवाह नहीं करेगा जिनकी पूजा स्त्रियाँ किया करती हैं। वह किसी भी देवता की परवाह नहीं करेगा बल्कि वह स्वयं अपनी प्रशंसा करता रहेगा और अपने आपको किसी भी देवता से बड़ा मानेगा। 38वह अपने पूर्वजों के देवता की अपेक्षा किले के देवता की पूजा करेगा वह सोने, चाँदी, बहुमूल्य हीरे जवाहरात और अन्य उपहारों से एक ऐसे देवता की पूजा करेगा जिसे उसके पूर्वज जानते तक नहीं थे।

39"'इस विदेशी देवता की सहायता से वह उत्तर का राजा सुदृढ़ गढ़ियों पर आक्रमण करेगा। वह उन लोगों को सम्मान देगा जिनकों वह बहुत पसन्द करेगा। वह बहुत से लोगों को उन के अधीन कर देगा। वे राजा जिस धरती पर राज करते हैं, उसके लिये वह उनसे भुगतान लिया करेगा।

40"'अंत आने के समय उत्तर का राजा, उस दक्षिण के राजा के साथ युद्ध करेगा। उत्तर का राजा उस पर हमला करेगा। वह रथों, घुड़सवारों और बहुत से विशाल जलयानों को लेकर उस पर चढ़ाई करेगा। उत्तर का राजा बाढ़ के से वेग के साथ उस धरती पर चढ़ आयेगा। 41उत्तर का राजा 'सुन्दर धरती' पर आक्रमण करेगा। उत्तरी राजा के द्वारा बहुत से देश पराजित होंगे किन्तु एदोम, मोआब और अम्मोनियों के मुखिया बच जायेंगे। 42उत्तर का राजा बहुत से देशों में अपनी शक्ति दिखायेगा। मिस्र को भी उसकी शक्ति का पता चल जायेगा। 43वह मिस्र के सोने चाँदी के खजानों और उसकी समूची सम्पत्ति को छीन लेगा। लूबी और कूशी लोग भी उसके अधीन हो जायेंगे। 44किन्तु उत्तर के उस राजा को पूर्व और उत्तर से एक समाचार मिलेगा जिससे वह भयभीत हो उठेगा और उसे क्रोध आयेगा। वह बहुत से देशों को तबाह कर देने के लिये उठेगा। 45वह अपने राजकीय तम्बू समुद्र और सुन्दर पवित्र पर्वत के बीच लगवायेगा। किन्तु आखिरकार वह बुरा राजा मर जायेगा। जब उस का अंत आयेगा तो उसे सहारा देने वाला वहाँ कोई नहीं होगा।'"

12 "दर्शन वाले व्यक्ति ने कहा, 'हे दानिय्येल, उस समय मीकाएल नाम का वह प्रधान स्वर्गदूत उठ खड़ा होगा। मीकाएल तुम्हारे यहूदी लोगों का संरक्षक है। फिर एक विपत्तिपूर्ण समय आयेगा। वह समय इतना भयानक होगा, जितना भयानक इस धरती

पर, जब से कोई जाति अस्तित्व में आयी है, कभी नहीं आया होगा। किन्तु हे दानिय्येल, उस समय तेरे लोगों में से हर वह व्यक्ति जिसका नाम, जीवन की पुस्तक में लिखा मिलेगा, बच जायेगा। 2धरती के वे असंख्य लोग जो मर चुके हैं और जिन्हें दफ़नाया जा चुका है, उठ खड़े होंगे और उनमें से कुछ अनन्त जीवन जीने के लिए उठ जायेंगे। किन्तु कुछ इसलिए जागेंगे कि उन्हें कभी नहीं समाप्त होने वाली लज्जा और घृणा प्राप्त होगी। 3आकाश की भव्यता के समान बुद्धिमान पुरुष चमक उठेंगे। ऐसे बुद्धिमान पुरुष जिन्होंने दूसरों को अच्छे जीवन की राह दिखाई थी, अनन्त काल के लिये तारों के समान चमकने लगेंगे।

4"'किन्तु हे दानिय्येल! इस सन्देश को तू छिपा कर के रख दे। तुझे यह पुस्तक बन्द कर देनी चाहिये। तुझे अंत समय तक इस रहस्य को छिपाकर रखना है। सच्चा ज्ञान पाने के लिए बहुत से लोग इधर–उधर भाग दौड़ करेंगे और इस प्रकार सच्चे ज्ञान का विकास होगा।'

5"फिर मैं (दानिय्येल) ने दृष्टि उठाई और दो अन्य लोगों को देखा। उनमें से एक व्यक्ति नदी के उस किनारे खड़ा हुआ था जिस किनारे मैं था और दूसरा व्यक्ति नदी के दूसरे किनारे खड़ा था। 6वह व्यक्ति जिसने सन के कपड़े पहन रखे थे, नदी में पानी के बहाव के विरुद्ध खड़ा था। उन दोनों में से किसी एक ने उससे पूछा, 'इन आश्चर्यपूर्ण बातों को समाप्त होने में अभी कितना समय लगेगा?'"

7"वह व्यक्ति जिसने सन के वस्त्र धारण किया हुआ था और जो नदी के जल के बहाव के विरुद्ध खड़ा हुआ था, उसने अपना दाहिना और बायां–दोनों हाथ आकाश की ओर उठाये। मैंने उस व्यक्ति को अमर परमेश्वर के नाम का प्रयोग करके एक शपथ बोलते हुए सुना। उसने कहा, यह साढ़े तीन साल तक घटेगा। पवित्र जन की शक्ति टूट जायेगी और फिर ये सभी बातें अंतिम रूप से समाप्त हो जाएँगी।'

8"मैंने यह उत्तर सुना तो था किन्तु वास्तव में मैंने उसे समझा नहीं। सो मैंने पूछा, 'हे महोदय, इन सभी बातों के सच निकलने के बाद क्या होगा?'

9"उसने उत्तर दिया, 'दानिय्येल, तू अपना जीवन जीए जा। यह संदेश गुप्त है और जब तक अंत समय नहीं आयेगा, यह गुप्त ही बना रहेगा। 10बहुत से लोगों को शुद्ध किया जायेगा। वह लोग स्वयं अपने आप को स्वच्छ करेंगे किन्तु दुष्ट लोग, दुष्ट ही बने रहेंगे और वे दुष्ट लोग इन बातों को नहीं समझेंगे किन्तु बुद्धिमान इन बातों को समझ जायेंगे।

11"'जब दैनिक बलियाँ रोक दी जायेंगी तब से अब तक, जब वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित होगा जो सचमुच विनाशक होगा, एक हजार दो सौ नब्बे दिनों का समय बीत चुका होगा। 12वह व्यक्ति जो प्रतीक्षा करते हुए इन एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों के समय के अंत तक पहुँचेगा, वह बहुत अधिक भाग्यशाली होगा।

13"'हे दानिय्येल। जहाँ तक तेरी बात है, जा और अंत समय तक अपना जीवन जी। तुझे तेरा विश्राम प्राप्त होगा और अंत में तू अपना भाग प्राप्त करने के लिये मृत्यु से फिर उठ खड़ा होगा।'"

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html